# मुझे वेष श्रमण का मिलना रे...

(श्रमण वेष-क्रिया-भाव का Importance बताती हुई पुस्तिका)


* दिव्याशीष *

युगप्रधान आचार्यसम पू.पं.श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा.

# समर्पणम्

वे सब त्यागी + भोगी संयमीओ को

* जिसने छोटे परिवार को त्याग कर - हजारो संयमियो को अपना परिवार रुप बना दिया है।

* जिसने अपने एक-दो घर को त्याग कर भारत के हजारो उपाश्रयों में उतरने व रहने का आनन्द पाया है।

* जिसने अपने घर की रसोई को त्याग कर हजारो घरो की रसोई वापरने की शास्त्रीय अनुमति पाई है।

* जिसने 5-10 शहरो-गाँवो मे फिरने का त्याग कर हजारो गाँवो-शहरों मे पैदल चल कर निवास किया है।

* जिसने दो-चार संतानो के पिता बनने का त्याग कर सैंकडो हजारो के पिता (रक्षक) बनने का सहर्ष स्वीकार किया है।

* जिसने संसार की स्त्रियों का त्याग कर मुक्ति स्त्री के पीछे पागल बनकर दौड शुरु की है।

* जिसने संसार के परिग्रह को त्याग कर स्वाध्याय + श्रुतज्ञान + गुणों का परिग्रह करना शुरु किया है।

ओर-ओर-ओर....

वे मुमुक्षुओ को

जो भविष्य में एसे त्यागी + योगी बनने वाले है

इन सब के हस्तकमल में यह श्रमण वेष का + भावदीक्षा की महिमा बताने वाला पुस्तक सह आनन्द समर्पण करता हूँ

**मु. गुणहंस विजय**

# मुझे वेष श्रमण का मिलना रे...

(श्रमण वेष-क्रिया-भाव का Importance
बताती हुई पुस्तिका)

*युगप्रधान आचार्यसम पू.पं.श्री चंद्रशेखरविजयजी म.सा.*

*** दिव्याशीष ***

सिद्धान्त महोदधि सच्चारित्र चूडामणि
पूज्यपाद आ. भगवंत श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराज के
विनय पूज्यपाद युगप्रधानाचार्यसम
प.प्रवर श्री चंद्रशेखर विजयजी म. साहेब


*** लेखक ***

# मु. गुणहंस वि.

*** अनुवादक ***

मंजुलाबहन



*** प्रकाशक ***

## कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102-ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ओफिस के सामने, भठ्ठा, पालडी, अहमदाबाद - 7.

प्रथम संस्करण (हिन्दी) : 500 नकल

*** प्राप्ति स्थल ***

नरेश भाई
373, मिन्ट स्ट्रीट, राजेन्द्र काम्पलेक्स
(महाशक्ति होटल के पास)
चेन्नई-79. फोन : 9841067888

सुरेश भाई
पंकु कुंज, नं.401, मिन्ट स्ट्रीट
दूसरा माला, साहुकारपेट,
चेन्नई-79. फोनः 9840318499

विनीत जैन
नं. 1, पल्लीयप्पन स्ट्रीट,
(अन्ना पिल्लै स्ट्रीट के पास) चौथा माला,
चेन्नई-79. फोनः 9566292931

*** मूल्य ***

संूपर्ण पठन

*** मुद्रक ***

Divyam Graphics
YOUR IMAGINATION, OUR CREATION
9884232891

Chennai. Ph : 044-42140317/8148836497

# मुझे वेष श्रमण का मिलना रे...

मने वेष श्रमणनो मलजो रे...
महाविदेहमां प्रभु तारी पासे... (2) समोवसरणमां प्रभु
तारी पासे... मने वेष श्रमणनो मलजो रे...
मने मन श्रमणनु मलजो रे...
ममता मोटाई मोहमायाना बंधन संघला टलजो रे....

पंच महाव्रत पालु, पावन निर्दोषने निष्कलंक...
समतामां लयलीन रहेवुं सरखा राय ने रंक...
आँखो इर्यासमिते ठलजो रे.... ..1

आठ प्रहरनी साधना काजे, वहेली परोढे हुं जागु...
श्वासो लेवा माटे पण हुँ, गुरुनी आज्ञा याचुं,
मन गुरु आज्ञाअे ठलजो रे... ..2

सूत्र-अर्थने स्वाध्याय साधी, शास्त्रों सघला वांचु...
जिनवाणीनु परमरहस्य पामी अंतर यांचु...
मारी अज्ञानता सवि टलजो रे... ..3

आहारमां रस होय न कोई, घर-घर गोचरी भमवुं...
गामेगाम विचरता रहेवुं, कष्ट अविरत खमवुं...
मारा दोषो दूरे थाजो रे.... ..4

आ जीवन अणिशुद्ध रहीने, पामुं हुं अंतिम मंगल...
साधी समाधि मोक्ष ने पंथे, आतम रहे अविचल...
मारी सद्भावनाओं फलजो रे.... ..5

ज्ञानयोगी...

# अनुक्रमणिका


| क्रंम | विषय | पेजं नं. |
|---|---|---|
| 1. | दीक्षा लेनी क्यो जरुरी है | 1 |
| 2. | 4-5-6 गुणस्थान के वेष+क्रिया+भाव | 2 |
| 3. | 4-5-6 गुणस्थान के वेष+क्रिया कितने बार मिलते है | 3 |
| 4. | 4-5-6 गुणस्थान के भाव का स्वरुप | 5 |
| 5. | सम्यक्त्व के लिये कुल तीन प्रश्न | 6 |
| 6. | भाव सम्यक्त्व उत्कृष्ट से असंख्य भवो मे मिलता है | 7 |
| 7. | भाव सम्यक्त्व की 1 भव में जघन्य से 1 बार प्राप्ति चार प्रकार से... | 9 |
| 8. | भाव सम्यक्त्व एक भव मे उत्कृष्ट से 9000 वार | 10 |
| 9. | भाव सम्यक्त्व का अतिचार व अनाचार क्या है ? | 11 |
| 10. | मोक्ष तक भाव सम्यक्त्व असंख्य x 9000 | 12 |
| 11. | भाव श्रावक के असंख्य भव, सम्यक्त्व का असंख्यात्वा भाग | 13 |
| 13. | भाव दीक्षा के लिये तीन प्रश्न | 14 |
| 14. | भाव दीक्षा वाले भवों की उत्कृष्ट संख्या सिर्फ 8। | 15 |
| 15. | प्रभुवीर के 27 भव मे से 5 भव भाव दीक्षा वाले है | 16 |
| 16. | सम्यक्त्व, श्रावकपण, भाव दीक्षा कौन-कौन सी गति मे मिलती है ? | 18 |
| 17. | एक ही भव मे भाव दीक्षा उत्कृष्ट से 900 बार | 19 |
| 18. | एक ही भव मे भाव दीक्षा जघन्य से 1 बार चार प्रकार से | 20 |

19. ओघा ग्रहण करते वक्त भावदीक्षा की शक्यता ज्यादा... 22

20. वर्तमान काल के मुमुक्षु कैसे है ? 22

21. भाव दीक्षा मे ही भावो का चढना-गिरना... 25

22. ज्वलन का उदय होता है तब तक भावदीक्षा टूटती नही... 26

23. मेघकुमार, भवदेव, हालिक, के दृष्टान्त... 26

24. भाव दीक्षा के अंत को मालूम करने के व्यवहार मान्य उपाय... 28

25. भाव दीक्षा की स्थिति मालूम करने के उपाय... 29

26. भाव दीक्षा की क्षति के बाद इसी ही भव मे उत्थान पानेवाले 10 जीव... 29

27. भावो का चढना-उतरना शेयरबजार के सेन्सेक्स से भी ज्यादा तीव्र... 31

28. उत्तमोत्तम श्रावक से सामान्य सच्चा साधु महान... 32

29. साधु वेष+साधु की क्रिया क्यो जरुरी ? 33

30. साधु वेष+साधु क्रिया बिना साधु भाव प्रायः अशक्य... 34

31. भरत-मरुदेवा का दृष्टान्त अरबो मे एक... 35

32. प्रभु ने 'हालिक दीक्षा छोडेगा', यह जानते हुए भी दीक्षा दी... 37

33. ज्योतिषी मुमुक्षु के दीक्षा के बाद भविष्य मे पतन बतावे तो ? 38

34. भावी पतन की चिंता छोडो, वर्तमान के उत्थान को स्वीकारो...39

35. वर्तमान मे ज्योतिषीयों के अभिप्रायः में स्पष्ट मत भेद... 39

36. ज्योतिषीयों के बारे मे क्या करना ? पाँच Points... 40

19. ओघा ग्रहण करते वक्त भावदीक्षा की शक्यता ज्यादा... 22

20. वर्तमान काल के मुमुक्षु कैसे है ? 22

21. भाव दीक्षा मे ही भावो का चढना-गिरना... 25

22. ज्वलन का उदय होता है तब तक भावदीक्षा टूटती नही... 26

23. मेघकुमार, भवदेव, हालिक, के दृष्टान्त... 26

24. भाव दीक्षा के अंत को मालूम करने के व्यवहार मान्य उपाय... 28

25. भाव दीक्षा की स्थिति मालूम करने के उपाय... 29

26. भाव दीक्षा की क्षति के बाद इसी ही भव मे उत्थान पानेवाले 10 जीव... 29

27. भावो का चढना-उतरना शेयरबजार के सेन्सेक्स से भी ज्यादा तीव्र... 31

28. उत्तमोत्तम श्रावक से सामान्य सच्चा साधु महान... 32

29. साधु वेष+साधु की क्रिया क्यो जरुरी ? 33

30. साधु वेष+साधु क्रिया बिना साधु भाव प्रायः अशक्य... 34

31. भरत-मरुदेवा का दृष्टान्त अरबो मे एक... 35

32. प्रभु ने 'हालिक दीक्षा छोडेगा', यह जानते हुए भी दीक्षा दी... 37

33. ज्योतिषी मुमुक्षु के दीक्षा के बाद भविष्य मे पतन बतावे तो ? 38

34. भावी पतन की चिंता छोडो, वर्तमान के उत्थान को स्वीकारो...39

35. वर्तमान मे ज्योतिषीयों के अभिप्रायः में स्पष्ट मत भेद... 39

36. ज्योतिषीयों के बारे मे क्या करना ? पाँच Points... 40

# प्रस्तावना

मेरे पास मुमुक्षु भूपतभाई और मुमुक्षु हेमांगभाई की दीक्षा तय हुई। उनके साथ भूपतभाई की श्राविका शोभा बहन तथा लडकी निधि बहन की भी दीक्षा तय हुई।

इन सब की दीक्षा की पत्रिका बनाने का समय आया, तब विचार आया कि लोग अच्छी पत्रिका पढकर, कार्यक्रम जान कर रद्दी मे देगें, फिर उसका उपयोग नही रहेगा। हा ! पत्रिका पढ कर आनन्द होगा व अनुमोदन करेगे.... ये सब फायदे जरुर है, लेकिन ऐसा भी करने मे आवे कि जिससे यह फायदा भी मिले, उसके साथ ही लम्बे समय तक यह पत्रिका बनी रहे तो विशेष अच्छा होगा ही ?

इस लिये निर्णय लिया कि यह दीक्षा का प्रसंग है व दीक्षा के अनुरुप विषयो को लेकर इसकी छोटी पुस्तक बना दे तथा शुरुआत मे दीक्षा की पत्रिका का रुप व सब कार्यक्रम का विवरण दे दे। जिससे यह पुस्तक दो चार-दस बार भी पढने के लिये काम मे आ सके। दीक्षा होने के बाद भी यह विषय पढने के लिये उपयोगी बनेंगे ही।

इस लक्ष्य से यह पुस्तक रुप पत्रिका तैयार की है। अब इच्छा है कि भविष्यमे ऐसे जो जो कार्यक्रम आवेगे तब उनकी एसी पत्रिका इस रुप से तैयार करना तथा हरेक पुस्तक मे ये कार्यक्रम के अनुरुप ही तात्विक विषय, उत्साहवर्धक विषयों को रखना। इच्छा प्रभु पूरी करे..... यह प्रार्थना !

प्रस्तुत पुस्तक में भाव दीक्षा का सामर्थ्य कितना जबरदस्त है ? उस भाव को दिलानेवाला साधुवेष+साध्वाचार का सामर्थ्य भी कितना जोरदार है ? ये विषय उल्लेख किये है। शास्त्र पाठो के आधार पर ये विषयोंका उल्लेख है। विषय गहन है, कहानी कम है।... लेकिन शान्ति से पढना, विचार करना । कोई संविग्न गीतार्थ

भगवंत के पास इसका अर्थ समझोगे तो एक बार तुम्हारी भी इच्छा हो जाएगी कि ''मै भी दीक्षा ले लू....'' तथा इसके लिये पुरुषार्थ भी शुरु कर दोंगे ।

विषय समझ मे न आवे तो भी मेहनत करना। दो-तीन बार पढने से जब समझ मे आयेगा, तब तुम भी नाचने लगोगे। सुलभ हो तो कोई संविग्न गीतार्थ गुरु भगवंत के पास विषय स्पष्ट कर लोगे, जिससे कोइ भ्रमणा न रह जाए और उन सद् गुरु के पास से स्पष्ट मार्ग दर्शन प्राप्त होगा।

इस पुस्तक मे जिनाज्ञा से विपरीत कुछ भी लिखा हो, तो मन-वचन-काया से मिच्छामि दुक्कड़म !

युगप्रधानाचार्यसम प.पं. चन्द्रशेखर वि.म.सा. के

शिष्य मु. गुणहंस वि.

वि.सं.

।। नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय।।

# मुझे वेष श्रमण का मिले रे

## दीक्षा लेना क्यो जरुरी है ?

गुरुजी ! आज के जमाने में सैंकडो लोग दीक्षा ले रहे है, यह भले ही ठीक होगा, लेकिन मुझे ऐसा प्रश्न होता है कि ''दीक्षा लेनी क्यो जरुरी है ?''

यह प्रश्न होने के दो कारण है, इसमे पहला कारण...

दीक्षा लेना है मोक्ष के लिये। अब यह दीक्षा व्यवस्थित पालने मे आवे तो ही मोक्ष प्राप्त होगा? यदि दीक्षा के बाद व्यवस्थित जीवन जीने में न आवे तो दीक्षा मात्र वेष परिवर्तन ही बनी रहेगी।

अब वर्तमान काल मे तो दीक्षा के बाद बहुत से आचारो मे छूट लेनी ही पडती है, यह सब जानते है (1) आधाकर्मी पानी (2) विहार मे आदमी.. वगैरह तो फिर यह दीक्षा लेने का कोई मतलब नहीं है।

दूसरा कारण संसार मे रहकर अच्छी आराधना कर सकते है। आज भी श्रावक-श्राविकाए आश्चर्य जनक आराधना करते है।

एक जवान बहन ने 180 सलंग उपवास किये।

पालीताणा मे एक भाई ने 80 करोड रुपये खर्च कर चातुर्मास करवाया।

कितने ही जवान लडके-लडकीयो ने (लग्न) शादी के बाद भी आजीवन चतुर्थ व्रत का पच्चक्खाण लिया। नव्वाणु, उपधान, छःरी पालित संघ, चातुर्मास... ये सब आराधना अब हजारो श्रावक-श्राविकाएँ स्वयं करते है और करवाते है।

श्रावक जीवन मे ये अच्छा है कि इच्छा अनुसार पच्चखाण (प्रतिज्ञा) लिया जाता है और उसे पालन किया जा सकता है, इसलिये व्रत भंग का दोष नही लगता है। जबकि साधु जीवन मे तो सम्पूर्ण पापो का पच्चक्खाण (प्रतिज्ञा) ली जाती है अर्थात इसमे यदि दीक्षा के बाद बड़े-छोटो दोष लगते है, तो व्रत भंग को दोष लगता है। इसलिये संसार मे रहकर मोक्ष मार्ग की

आराधना करना अधिक उचित होगा।

हा ! साधु बनने से जल्दी मोक्ष मिलेगा, श्रावकता से थोडा देरी से मोक्ष मिलेगा.... परन्तु श्रावकता में कोई कठिनाई तो है नही, जबकि साधुत्व मे कठिनाई का कोइ पार नही है। इसलिए यदि थोड़ी देरी से मोक्ष मे जायेगे तो क्या फरक पडेगा ?

## भगवान की विश्व को अनमोल भेट : दीक्षा

**गुरुः** शिष्य ! तुम्हारी बात सबको सच्ची लगती है क्योकि यह बुद्धि मे बैठ जाती है। लेकिन हकीकत दूसरी है। भगवान ने दीक्षा के उपर जबरदस्त भार रखा है। स्पष्ट शब्दो मे कहे, तो प्रभु एक ही बात करते है ''दीक्षा ही लेनी चाहिए। हा ! अगर शक्य नही हो तो आखिर अपवाद रुप में श्रावक तो बनना ही है।''

हम यहाँ देखेगे कि ''दीक्षा जीवन की क्या ताकत है। लेकिन इन शास्त्रीय पदार्थो को तुम ध्यान से सुनो ! बराबर विचार करोगे तो बहुत रहस्य जानने को मिलेगा।

| | गुणस्थानक-4 | गुणस्थानक-5 | गुणस्थानक-6 से 14 |
|---|---|---|---|
| | अविरत - सम्यक्त्वी | श्रावक | साधु |
| वेष : | पूजा के कपडे तिलक वगैरह | सामायिक के कपडे वगैरह | ओघा, मुहपत्ती, पात्रा वगैरह |
| क्रिया : | जिन पूजा + गुरुवंदन+ साधर्मिक भक्ति चैत्यवंदन वगैरह | बारव्रत + सामायिक + पौषध + नवकारशी + एकासणा वगैरह | गोचरीचर्या + लोच + विहार + षट्कायरक्षा + आगमाभ्यास + वैयावच्चादि |
| भाव : | सुदेव+सुगुरु-सुधर्म के प्रति अनन्य श्रद्धा ! ''यह ही सत्य है दूसरा खराब है'' ऐसी अन्तरमन की आवाज | छोटे बडे पापों का त्याग के परिणाम। वे पाप नही करने में मस्ती... | सब के सब पापों का त्याग का परिणाम। कोई भी पाप न करने में मस्ती... |

आत्मा क्रमशः विकास पाकर पहले गुण स्थानक से ठेठ चोदहवे गुणस्थानक मे पहुंच कर मोक्ष जाता है।

पहला गुणस्थाणक अर्थात मिथ्यात्व !

चौथा गुणस्थाणक अर्थात अविरत-सम्यकत्वी !

पांचवाँ गुणस्थानक अर्थात देशविरत श्रावक !

छट्ठा गुणस्थानक अर्थात सर्वविरत साधु !

यह सब गुणस्थाणक की निश्चय व व्यवहार इन दोनो ढंग से विचारना होती है। इसमे पहले व्यवहार से विचार करते है।

व्यवहार अर्थात व्यवहार ! इसमे सच्चाई भी है, सच्चाई न भी होती है तो भी व्यवहार तो इसी रीति से रहता है।

यह व्यवहार मुख्य रुप से दो वस्तु के आधार पर होता है।

(1) वेष (2) क्रिया

(1) **मिथ्यात्व :** जो बाबा-सन्यासी के वेष वाले होते है, स्वामी नारायण के तिलक वाले होते है सिख धर्म सूचक सिर पर पगडी वाले या मुस्लिम धर्म का सूचक करने वाले सिर पर कफन वाले होते है।

ये सब वेष देखकर ही व्यवहार होता है, ये सब जैन नही है अर्थात कि मिथ्यात्वी है अजैन है

ऐसे

जो मस्जिद मे नमाज पढते है, वे मुसलमान !

तो राम-कृष्ण के मन्दिर मे भक्ति करते है, वे हिन्दू!

जो बुद्ध की पूजा करते है, वे बौद्ध !

इसमे क्रिया के आधार पर निश्चय होता है कि ये जीव मिथ्यात्वी है।

(2) **अविरत-सम्यक्त्वी** : जो प्रभु पूजा के पूजा के कपडे पहनते है, जो ललाट पर तिलक करते है... यह सब वेष देखकर ऐसा व्यवहार होता है कि ये जैन है।

ऐसे

जो ऋषभादिक की पूजा करता है, जैन साधु-साध्वीओ को वंदन करता है, उनकी सेवा करता है, जिनको पूछने में आवे कि तुम कौन हो ?

तो जो उत्तर देता है कि 'मै' जैन हूँ। मेरे भगवान जिनेश्वर...'' जो जैन साधर्मिको की भक्ति करता है जैन संघ का सदस्य है।

ऐसी ऐसी क्रियाओ के आधार पर वह जैन अविरतसम्यक्त्वी कहलाता है लेकिन उसके पास पाप के त्याग का नियम नही होता है।

(3) **श्रावक** : जिसने सामायिक-पौषधादि के कपडे धारण किये है, उपधान में ऐसे कपडे पहन कर बैठा हो, यह जीव वेष के आधार पर श्रावक कहने में आता है।

चरवला-कटासणा-मुहपत्ती लेकर जो सामायिक-पौषधादि क्रिया करता है, जो आयंबिल-उपवासादि तप करता है, जो रात्रि भोजन का यथा-शक्ति त्याग करता है जो बार व्रतों में से शक्ति अनुसार कम ज्यादा व्रत को स्वीकार करता है।

ये जीव क्रिया के आधार पर श्रावक कहलाता है।

(4) **साधु** : ओघा-मुहपत्ती वगैरह वेष के आधार पर जीव साधु कहलाता है।

विहार लोचादि क्रिया के आधार पर जीव साधु कहलता है।

ये सब व्यवहार नय है।

**शिष्य** : जिसके पास वेष-क्रिया है वह सही मे सच्चा तो होता है ना ?

**गुरु** : नहीं ऐसा नियम नही है।

जिसके पास पुलिस के कपडे है तो वह सच मे पोलीस ही है ऐसा नियम नही है। पिक्चर में पुलिस के ढंग से एक्टींग (क्रिया) करने वाले सब पुलिस ही होते है ऐसा नियम नही है। इसी तरह जिसके पास साधु वेष+साधु क्रिया है तो वह सच्चा साधु ही है, ऐसा नियम नहीं है।

**शिष्य** : यह वेष-क्रिया कितनी बार मिल सकती है ?

**गुरु** : कोई भी जीव अनादि काल से सूक्ष्म निगोद में ही था। वहाँ से निकल कर मोक्ष तक पहुंचता है। यह सूक्ष्म निगोद से मोक्ष तक इसका

संसार में भटकने का काल है। यह मरुदेवा माता के जैसे दो-तीन भव जितना यानी बहुत थोडा काल भी हो सकता है और उत्कृष्ट से तो अनंत-अनंत.......... भव भी हो सकता है।

इसलिये

निगोद से लेकर मोक्ष तक की यात्रा मे

**सम्यक्त्व का वैष व क्रिया उत्कृष्ट सै अनंतानंत बार मिल सकती है !**

**श्रावक का वैष व क्रिया उत्कृष्ट सै अनंतानंत बार मिल सकती है !**

**साधु का वैष व क्रिया उत्कृष्ट सै अनंतानंत बार मिल सकती है !**

**शिष्य** : हे ! अनंतबार .... ? ? ?

**गुरू** : अभव्यजीवो को भी यह वेष व क्रिया मिल सकते है, वे कभी भी मोक्ष जानेवाले नही है। इसलिये वे तो अनंतबार भी पा सकते है। इसके उपरांत भव्यजीव भी अनंतकाल के समय मे वेष और क्रिया को अनंत बार पा सकते है।

अब हम भाव की विचारणा करते है।

(1) ''सुदेव-सुगुरु-सुधर्म ही आदरणीय है पूजनीय है... वीतराग के वचन ही सच्चे... बाकी सब झूठे'' ऐसी अचल श्रद्धा.. ऐसा आगाढ विश्वास, यह भाव से सम्यक्त्व है।

(2) हालांकि मैं सब पापो का त्याग नही कर सकता लेकिन मुझे ये ये पाप तो नही ही करने। ''ये पाप मेरे से न हो'' ऐसा जो कुछ कुछ पापो का त्याग परिणाम, ये भाव से देशविरति ! यह जीव देशविरतिधर श्रावक !

(3) ''मुझे मोक्ष जाना है। इसलिये मुझको मोक्ष को रोकने वाले हिंसा झूठादि सब के सब पाप नही करने। ये मेरे से नही होगे।'' एसे सबके सब पापो के लिये त्याग परिणाम है। यह सब भाव से सर्वविरति, यह जीव सर्वविरतिधर साधु !

हमको यह भावो की विचारणा करनी है।

एक दम एकाग्र बन कर सुनो !!!

हरेक के लिये तीन प्रश्नो का जवाब पाना है

**1. भाव सम्यक्त्व कुल कितने भवो मे मिलता है ?**

**2. भाव सम्यक्त्व एक ही भव में कुल कितनी बार मिलता है ?**

**3. भाव सम्यक्त्व निगोद से लेकर मोक्ष तक कुल कितनी बार मिलता है ?**

ये ही तीन प्रश्न भाव देशविरति और भाव सर्वविरति (अर्थात कि भाव दीक्षा) के लिये भी विचारना है।

**शिष्य** : हमारे ये तीन प्रश्न है लेकिन ये प्रश्न ही मुझे समझ मे नही आते। पहले इन प्रश्नो के भावार्थ स्पष्ट करिये, फिर उत्तर की बात...

**गुरु** : कोइ भी जीव निगोद से लेकर मोक्ष तक अनंतानंत भव करता है, लेकिन इसके हर-हर भव मे भाव सम्यक्त्व नही मिलता है। तो जो भव में इसको भाव सम्यक्त्व मिलता है, ऐसे भव कम से कम कितने ? और ज्यादा से ज्यादा कितने ? यह विचार करना है।

सोचो कि मरुदेवा माता मोक्ष मे गये, तब तक एक ही भव मे भाव सम्यक्त्व पाया...मरुदेवा माता के भव मे ही ?

प्रभुवीर नयसार-मरीचि.... वगैरह भव मे भाव सम्यक्त्व वाले थे, लेकिन बीच-बीच मे त्रिदंडी भवो मे भाव सम्यक्त्व वाले नही थे।

तो मोक्ष प्राप्ति तक उत्कृष्ट से ऐसे कितने भव होते है जिसमे जीव भाव सम्यक्त्व पाता है ?

**शिष्य** : मुझे पता नही ? आप ही इसका जवाब दीजिये...

**गुरु** : असंख्य।

**शिष्य** : असंख्य क्या है। कितने अरब ?

**गुरु** : असंख्य अर्थात असंख्य ! ये अरबो में नही मापे जाते। इसके लिये चतुर्थ कर्म ग्रंथ देख लो, सब समझ में आ जायेगा। फिर भी इसकी सामान्य व्याख्या बाद मे बताऊंगा। अब तो इतना ही समझो कि असंख्य

अर्थात .......... ?

**शिष्य** : लेकिन सम्यक्त्व के बाद इतने भव ?

**गुरू :** खडे रहो भाई! भूल करते हो । सम्यक्त्व बाद तो अनंता भव भी हो सकते है। यह तो सम्यक्त्व प्राप्तिवाले भवो की बात है। इसलिए अनंता भवो मे से जो जो भव मात्र मिथ्यात्व वाले है, उनकी तो गिनती ही नही आती, लेकिन जिसमे भाव सम्यक्त्व प्राप्त हुए है उन्ही भवो की संख्या असंख्य।

**शिष्य** : अहो आश्चर्य! क्या सम्यक्त्व जल्दी से मोक्ष नहीं दिला सकता ?

**गुरू** : दिला भी सकता है, लेकिन उत्कृष्ट से इतने सारे भव भी हो सकते है। मोक्ष इतना आसान नहीं है।

**शिष्य** : अब दूसरा प्रश्न ! एक भव मे सम्यक्त्व कितनी बार प्राप्त हो सकता है ? इसका जवाब भी मुझे नही आता है। यह आपको ही देना पडेगा।

**गुरू** : इसमे दो जवाब, जघन्य से (Minimum) व उत्कृष्ट से (Maximum)।

एक भव मे सम्यक्त्व जघन्य से एक ही बार प्राप्त होता है...

एक भव मे सम्यक्त्व उत्कृष्ट से 9000 बार प्राप्त होता है...

**शिष्य** : एक बार प्राप्त होता उसका क्या अर्थ, क्या बाद में मिलता ही नहीं?

**गुरू** : यह बात तुम्हे दृष्टान्त से समझाता हूँ।

एक व्यक्ति ने शादी की, लग्न जीवन मे रोज छोटे बड़े झगडे तो चलते ही रहते है और रोज उसका समाधान होता रहता है,,, इस प्रकार उसका पूरा जीवन समाप्त हुआ। अब मैं तुम्हे पूछता हूँ कि इसने पूरे भव में कितने लग्न किये ?

**शिष्य** : एक ही...

**गुरू** : लेकिन बीच मे छोटे मोटे झगडे बहुत हुए है...

**शिष्य** : ठीक लेकिन तलाक तो नही हुआ है ना? इसलिये एक ही लग्न गिना जाता है।

**गुरु**: समझो कि बीच बीच मे तलाक की भी बाते खडी हुई हो तो ?

**शिष्य** : लेकिन तलाक तो नही न ? मात्र बाते ही हुई है, इसलिये लग्न तो एक ही गिना जायेगा।

**गुरु** : समझो कि तलाक हो गया हो तो ?

**शिष्य** : तो भी तलाक के बाद दूसरी शादी न की हो तो एक ही लग्न कहा जायेगा।

**गुरु** : समझो कि युगलिक के जैसे पति-पत्नी हो अर्थात् शादी के बाद भी एक बार छोटा भी झगडा न हुआ हो तो?

**शिष्य** : तो तो गुरुजी! पूरी जिन्दगी मे 100% एक ही लग्न किया हुआ गिना जायेगा।

**गुरु** : शाबाश !!!

इसलिए

(1) शादी के बाद छोटा-बडा एक भी झगडा नही और सम्पूर्ण सुखमय जिन्दगी.... तो पूरी जिन्दगी मे एक ही लग्न किया कहलायेगा।

(2) शादी के बाद छोटे-बडे झगडे हुए लेकिन सबके समाधान हो गए। समाधान न हो, तो भी तलाक तो न हुआ हो तो भी एक ही लग्न किया कहलायेगा।

(3) शादी के बाद छोटे-बडे झगडे हुए तलाक तक बाते चली, लेकिन तलाक न हुआ तो भी एक ही लग्न गिना जाएगा।

(4) शादी के बाद कोई भी कारण से तलाक होता है, तो एक लग्न समाप्त। लेकिन बाद में पूरी जिन्दगी दूसरी शादी न करे तो पूरी जिन्दगी तक एक ही लग्न गिना जाएगा।

इन चार तरीके से जिन्दगी मे एक ही लग्न गिना जायेगा।

अब यह सब सम्यग्दर्शन मे विचार करते है।

(1) सम्यक्त्व प्राप्त करने के बाद पूरे भव मे एक भी अतिचार का सेवन न किया निर्मलतम सम्यक्त्व पाला.... तब इस तरह कहलाएगा कि एक भव मे एक ही बार सम्यक्त्व प्राप्त हुआ।

(2) सम्यक्त्व प्राप्त करने के बाद समकित मोहनीय के उदय से सम्यक्त्व मे छोटे बडे अतिचार लगे तो सम्यक्तव मलिन होता है लेकिन सम्यक्त्व का नाश न हो व मिथ्यात्व न आवे... आलोचना प्रायश्चितादि के द्वारा अतिचारो को साफ कर सम्यक्त्व को शुद्ध कर दे या साफ न करे व सम्यक्त्व दूषित रहे तो भी यही कहा जाएगा कि एक भव मे एक बार ही सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई।

(3) सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद अतिचार लगते है व ऐसा बडा अतिचार भी लग जाए व सम्यक्त्व समाप्त हो गया ऐसी हालत हो जाए, फिर भी सम्यक्त्व समापन न हो, टिका रहे, तो भी ऐसा ही कहा जाएगा कि एक भव मे एक ही बार सम्यक्त्व प्राप्त हुआ ।

(4) सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद सम्यक्त्व सम्बंधी बडे दोषो का सेवन हो गया अर्थात् कि सम्यक्त्व सम्बंधी अनाचार का सेवन हो गया। इस कारण सम्यक्त्व का नाश हो जाए, जीव मिथ्यात्व मे जाए और इस भव मे वापस सम्यक्त्व की प्राप्ति न मिले तो भी यही कहेंगे कि एक भव में एक ही बार सम्यक्तव की प्राप्ति हुई।

**शिष्य** : सम्यक्त्व का अतिचार व अनाचार क्या है ?

**गुरू** : वंदित्तु सूत्र मे बताया है कि इस प्रकार से जिन वचन मे शंका करने से दूसरे धर्म की इच्छा करने से इत्यादि अनेक प्रकार से सम्यक्त्व अतिचारो लगते है। ये ही दोष जब बडे प्रमाण मे लगे तब ये अनाचार कहलाते है।

संक्षिप्त मे

शुद्ध सम्यक्त्व को मलिन करता है वह अतिचार... समाप्त कर देता है वह अनाचार।

जीवित सम्यक्त्व को बीमार करे वो अतिचार... समाप्त कर देता है वह अनाचार।

हम अब इसका विचार नही करेंगे क्योंकि प्रधानता से तो इस पुस्तक मे दीक्षा की ताकत तथा उसके लिये इसकी जरुरत बताने का लक्ष्य है। इसलिए दीक्षा मे अतिचार व अनाचार क्या है ? आदि वर्णन हम आगे बराबर करेंगे।

मुख्य बात पर फिर से आते है....

एक भव मे जघन्य से एक बार व उत्कृष्ट से 9000 बार सम्यक्त्व प्राप्त होता है।

इसमे हमने एक बार का स्वरुप देख लिया है।

अब 9000 बार की विचारना करते है।

कोई पुरुष तलाक के बाद दूसरा विवाह करता है तो पूरी जिन्दगी मे दो बार शादी की, ऐसा कहा जाएगा। लेकिन दूसरी शादी भी टूट जाए तलाक हो जाए व तीसरी शादी करे ? तो जिन्दगी मे कुल तीन लग्न... तीसरा भी टूटे, चौथा हो जाए तो कुल चार.....

इस तरह

सम्यक्त्व मिलने के बाद चला जाए व इसी भव मे वापस मिल जाए तो एक भव मे 2 बार... दूसरी बार मिला हुआ सम्यक्त्व चला जाए, तीसरी बार मिले तो एक भव मे 3 बार...... वापस यह सम्यक्त्व चला जाए, चौथी बार मिले.... तो एक भव मे 4 बार !

इस तरह एक भव मे उत्कृष्ट से 9000 बार सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। बस बाद मे जो सम्यक्त्व चला जाए तो इस भव मे फिर से सम्यक्त्व नही मिलेगा। मरकर दूसरे भव मे जाते हो, तो वहा सम्यक्त्व मिल सकता है। वह भी जघन्य से 1 और उत्कृष्ट से 9000 बार समझ लेना चाहिए।

**शिष्य** : दूसरे भव मे सम्यक्त्व मिलेगा ही, ऐसा नियम है ?

**गुरु** : नही शिष्य ! बहुत लोग लग्न के बिना पूरी जिंदगी कुंवारे होते है

या नही? इस तरह ऐसे भव भी हो सकते है जिसमे सम्यक्त्व की प्राप्ति नही होती है।

**शिष्य** : एक राजा एक साथ 500 स्त्रियों के साथ विवाह करता है। तथा उन के साथ तलाक भी हो जाता है, तो भी 500 शादी किया हुआ कहलाएगा। इसी प्रकार यहाँ 9000 की गिनती भी इस तरीके से हो सकती है क्या ? अर्थात् तलाक के बाद दूसरी शादी करे.... ऐसे नही। बिना तलाक के भी 2-5 शादी.. इसी तरह यहाँ सम्यक्त्व एक बार नाश होने के बाद वापस सम्यक्त्व... इस ढंग से 9000 बार सम्यक्त्व नही, परन्तु सम्यक्त्व नाश हुए बिना नये सम्यक्त्व की प्राप्ति.... ऐसा भी बन सकता है न गुरुजी ?

**गुरु** : नही ऐसा नही बन सकता है। यहाँ तो हिन्दु कोड बील समझने की जरुरत है। अर्थात् हिन्दुलोग एक ही शादी कर सकते है। पत्नी के साथ तलाक हो या पत्नी मर जाती है तो ही दूसरी शादी कर सकते है..... उसके सिवा नही। इसी तरह सम्यक्त्व की 9000 बार की प्राप्ति भी इसी तरह से गिनने की है।

**शिष्य** : अब तीसरे प्रश्न का विचार करने का है। निगोद से लेकर मोक्ष तक भाव सम्यक्त्व की प्राप्ति कितनी बार हो सकती है ?

**गुरु** : इसका जवाब तुम्ही दो !!!

**शिष्य** : यह तो मुझे नही आता है।

**गुरु** : ऐसा नही चलेगा। पहले दो प्रश्नों के जवाब के आधार पर तीसरे प्रश्न का जवाब मिल जाता है। कुछ विचार करो! बुद्धि दौडाओ।

**शिष्य** : बस आप कहते है तो विचार करता हूँ।

भाव सम्यक्त्व की प्राप्ति वाले कुल भव असंख्य हो सकते है यह पहला जवाब है.... इन हरेक हरेक भव मे भाव सम्यक्त्व की प्राप्ति 9000 बार हो सकती है, यह दूसरा जवाब।

हो ! बराबर !!!

यदी 1 भव मे उत्कृष्ट से 9000 बार....

तो असंख्य भव मे.... कितनी बार.......

$$\frac{\text{असंख्य} \times 9000}{1}$$

बराबर है ?

**गुरू** : शाबाश ! असंख्य अर्थात् समझो कि एक अरब गिने तो कुल 9000 अरब बार निगोद से मोक्ष तक भाव सम्यक्त्व की प्राप्ति हो सकती है।

ध्यान रखना, 9000 अरब बार प्राप्ति इसका मतलब यह कि इतनी बार सम्यक्त्व नाश हुआ है व वापस मिला है। इस तरह से ही इतनी बार प्राप्त हुआ गिना जायेगा।

ध्यान में लीजिए असंख्य = 1 अरब ऐसा भूल से भी मत मानना। चौथा कर्म ग्रंथ पढे बिना इसका अंदाजा तुम्हे नही लगाना है। इसका कच्चा अन्दाज तुम्हे आगे बताऊंगा।

**शिष्य** : बस यह पदार्थ तो समझ मे आ गया परन्तु इसमे दीक्षा का महत्व कहाँ सिद्ध होता है ?

**गुरू** : तुम शांति से सुनो !

अब हम देशविरति की विचारना करते है !

इसमे भी तीन प्रश्न व इनका तीनो का जवाब :-

1.भावदेशविरति की प्राप्ति कुल असंख्य भवों मे हो सकती है!

2.भावदेशविरति की प्राप्ति भव मे उत्कृष्ट से 9000 बार हो सकती है!

3.भावदेशविरति की प्राप्ति निगोद से लेकर मोक्ष तक उत्कृष्ट से असंख्य X 9000 बार हो सकता है !

**शिष्य** : इसलिए सम्यक्त्व और देशविरति दोनो मे एक समान ही परिस्थिति है न ?

**गुरू** : आपात्दृष्टि से एक समान लगता है। मुख्य फरक है असंख्य शब्द का...

जैसे 2 एक संख्या है, 20 भी एक संख्या है, 200, 2000, 20000, 2 लाख, 20 लाख, 2 क्रोड, 20 क्रोड, 2 अरब, 20 अरब.... ये सब संख्या है, लेकिन 2 और 20 अरब की संख्या के बीच मे जमीन आसमान का फरक है न ?

इसी तरह

असंख्य भी असंख्य प्रकार के है

देशविरति की प्राप्ति वाले असंख्य भवों की जो संख्या है

उससे सम्यक्त्व की प्राप्ति वाले असंख्य भव की संख्या असंख्य गुण है।

दूसरी भाषा मे कहे तो,

देशविरति की प्राप्ति वाले भवो की संख्या= मानो कि 1 करोड है!

तो सम्यक्तव की प्राप्ति वाले भवो की संख्या = 2 अरब करोड है (एक अरब गुणा) !

इतना बडा फरक है ।

अर्थात्,

निगोद से लेकर मोक्ष तक देशविरति की प्राप्ति कुल 2 करोड x 9000 बार....

निगोद से लेकर मोक्ष तक सम्यक्त्व की प्राप्ति कुल 2 अरब क्रोड x 9000 बार.....

**शिष्य** : इससे क्या साबित हुआ ?

**गुरू :** देशविरति की ताकत सम्यक्त्व से असंख्य गुणी है। यह साबित (मालूम) होता है। सम्यक्त्व कहता है, कि ''तुम मुझे पाकर मोक्ष जाना चाहते हो तो मैं तो उत्कृष्ट से 2 अरब क्रोड भव तक मिलता रहूंगा । तब तक तो मोक्ष में नही भी जाओगे और बाद मे जब मोक्ष होगा, तब विरति के बिना

तो नहीं ही।''

देशविरति कहती है कि ''तुम मुझे पाने के बाद जब तक मोक्ष के लिए तैयार नही होते तब तक तो मैं उत्कृष्ट से 2 क्रोड भव तक ही मिला करुँगी। बाद में नही। अर्थात् मुझे पाने के बाद तुम सम्यक्त्व की अपेक्षा तो बहुत कम भव अर्थात कि असंख्यात्वे भाग जितने भवो में ही मोक्ष पाओगे!''

देशविरति की ताकत कितनी ? ये इसके ऊपर से समझ मे आता है।

(ये सब बाते भाव-देशविरति की अपेक्षा से ही समझी जाएँ।) वेष से या क्रिया से देश विरति तो अनंतानत बार मिल सकती है, फिर भी मोक्ष की निश्चिता नही है।

**शिष्य** : अब हम सर्व विरति का विचार करते है !

**गुरू** : हा ! यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है !

भाव दीक्षा, भाव संयम, भाव प्रव्रज्या, भावसर्वविरति, भाव साधुता, भाव श्रमणत्व.. वगैरेह अनेक नाम से यह भाव दीक्षा को पहचान सकते है।

भाव शब्द इसलिये रखा है कि मात्र वेष से दीक्षा या मात्र क्रिया से दीक्षा तो अभव्य को भी मिलती है और उसे अनंतानंत बार मिल सकती है। इसलिये उसकी चर्चा यहाँ नही करते है।

**शिष्य** : कहो, भाव दीक्षा के लिये कितने प्रश्न है ?

**गुरू** : यही तीन प्रश्न :-

**1. भाव दीक्षा कुल कितने भवो मे मिलती है ?**

**2. भाव दीक्षा एक भव मे कुल कितनी बार मिलती है ?**

**3. भाव दीक्षा निगोद से लेकर मोक्ष तक कुल कितनी बार मिलती है ?**

अब इनका समाधान देखते है

(1) भाव दीक्षा कुल कितने भवो मे मिलती है ?

जघन्य से मात्र 1 ही भव... और इसके बाद तुरन्त ही मोक्ष। जैसे कि मरुदेवा माता को उसी भव मे भावदीक्षा मिली, हाथी उपर बैठे बैठे ही गुणस्थान आ गया, दीक्षा का वेष या क्रिया नहीं, लेकिन दीक्षा का भाव (भाव दीक्षा) आ गया तथा तुरन्त ही मोक्ष प्राप्त कर लिया।

**शिष्य** : यह तो बराबर है, भाव दीक्षा उत्कृष्ट से कितने भवो में मिलती है?

**गुरु** : आठ !!!

**शिष्य** : बाप रे! सिर्फ आठ ही भव ! बस ! सम्यक्त्व के असंख्य, देशविरति के असंख्य व दीक्षा के सिर्फ आठ ही ?

**गुरु** : हा ! हा ! हा ! लेकिन भाव दीक्षा के आठ। वेष दीक्षा या क्रिया दीक्षा के नहीं। यह तो अनंता भी हो सकते है! अरे, हम भी अभी तक अनंती बार ओघा लिया ही है। हमने अनंती बार दीक्षा की क्रिया भी की है। अर्थात् कि दीक्षा का जीवन भी जिया है।

अनंतीबार लोच.... अनंतीबार विहार..... अनंतीबार योगोद्वहन.... अनंतीबार आचारांगादि का पाठ.... यह सब भी अनंतीबार, किया हुआ है और वह क्रिया दीक्षा है। इसके भव अनंता हो सकते है।

प्रस्तुत बात जो है वह भाव दीक्षा की है।

यह मात्र आठ ही भव मे प्राप्त होती है। आठवे भव में निश्चय ही उसे मोक्ष ही है।

**शिष्य** : आप आठ भव कहते हो, लेकिन ऋषभदेव के तो 13 भव है, पार्श्वनाथ भगवान के 10 भव है, नेमिनाथ प्रभु के 12 भव है, प्रभु वीर के 27 भव है, तो आठ भव की बात तो गलत लगती है ?

**गुरु** : भाग्यशाली ! अभी बराबर स्पष्ट करो। तुम जो भवो की बात कर रहे हो वे तो सम्यक्त्व की प्राप्ति से लगा कर मोक्ष तक के कुल कितने भव हुए ? इसकी बात है। इसमे तो भावदीक्षा वाले भव और भावदीक्षा बिना के..... इनमे तो सब भव आ गये है, जब कि मै जो बात करता हूँ वे केवल

भावदीक्षा के भवो की ही।

अब दृष्टात के साथ समझाता हूँ।

प्रभु वीर के 27 भव है। उसमे भाव दीक्षा वाले भव कितने ?

चलो देखते है

(1) नयसार के भव मे सम्यक्त्व है, भाव दीक्षा नही।

(2) देवलोक का भव है। इसमे भाव दीक्षा तो होती ही नहीं है।

(3) मरीचि के भव मे भाव दीक्षा मिली है। बाद मे सम्यक्त्व भी खोया। लेकिन एक बार भी भाव दीक्षा मिल गई इसलिये ये संपूर्ण भव गिना जाएगा।

(4) देवलोक का भव इसमे भावदीक्षा होती ही नहीं।

(5) त्रिदंडी ब्राह्मण है, वहा भाव दीक्षा मिली नहीं (मनुष्य भव है, जिससे मिल सकती है, लेकिन उनको मिली नहीं) !

(6) त्रिदंडी ब्राह्मण है वहाँ भाव दीक्षा मिली नहीं।

(7) से 15 ये सब भवो मे देवलोक या ब्राह्मण, मनुष्यादि कही भी भाव दीक्षा पाई नहीं।

(16) राजकुमार विश्वभूति ने दीक्षा ली है, सच्चे भाव से दीक्षा ली है, इसलिये यह भाव दीक्षा का भव कहा जा सकता है। हा ! आखिर नियाणा किया, जिससे बडा नुकसान हुआ।

(17) देव लोक मे, इसलिये भाव दीक्षा नही ही होती।

(18) वासुदेव बने, वासुदेव को भाव दीक्षा नही ही मिलती (इस जन्म मे।) !

(19) सात वी नरक मे गये। भाव दीक्षा नही ही होती है।

(20) सिंह बने, भाव दीक्षा नही ही होती है।

(21) चौथी नरक मे गये। भाव दीक्षा नही होती है।

(22) मनुष्य भव मिला, पुण्य स्थिति पाए, लेकिन भाव दीक्षा की प्राप्ति शास्त्रों में दिखाई नहीं।

(23) मूका राजधानी मे प्रियमित्र नाम के चक्रवर्ती हुए। क्रोडो वर्ष चारित्र पाला। यह भव भाव दीक्षा वाला गिना जायेगा।

(24) देव लोक मे गये, भाव दीक्षा वहाँ नही होती।

(25) नंदन राजर्षि हुए, सच्ची दीक्षा पाए। इसलिए यह भव भावदीक्षा वाला भव गिना जायेगा।

(26) देव लोक मे गये। भाव दीक्षा वहाँ नही होती।

(27) प्रभु वीर भव। इसमे तो भाव दीक्षा होती ही है। अब गणित करो।

तो तीसरा+सोलवा+तेईसवा+पच्चीसवा+सतावीस में ही भाव दीक्षा। इस तरह प्रभु के कुल 27 भवो मे कुल पाँच ही भव भाव दीक्षा वाले है। (सम्यक्त्व वाले भव ज्यादा है क्योकि भावदीक्षा वाले भव तो सम्यक्त्व वाले गिने ही जायेगे। तथा भाव दीक्षा बिना के भी सम्यक्त्व वाले भव भी गिने जायेगे। (उदाहरण : नयसार का भव + देवलोक के कुछ भव.... आदि)

**शिष्य** : अब समझ मे आया। भाव दीक्षा पाने के बाद उत्कृष्ट से आठ ही भव होते है... ऐसा नही। लेकिन भाव दीक्षा वाले भव उत्कृष्ट से 8 ही होते है। बीच बीच में भावदीक्षा बिगर के भव भी हो जाते है... बराबर ?

**गुरु** : एकदम बराबर !!!

**शिष्य** : किस-किस भवों मे भावदीक्षा मिल सकती है यह बताइये ?

**गुरु** : पहली बात ! सम्यक्त्व, देशविरति, भाव दीक्षा एकेन्द्रियो को, बेइन्द्रियो को, तेइन्द्रियो को, चउन्द्रियों को प्राप्त नही होती है। पंचेन्द्रिय मे भी असंज्ञी पंचेन्द्रियो को भी इनमे से एक भी वस्तु की प्राप्ति नहीं होती है।

देव-नारकी को संज्ञी-तिर्यंच-मनुष्यों को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो सकती है।

देश विरति की प्राप्ति तो देव-नारकी को भी नही, सिर्फ संज्ञी तिर्यंच-मनुष्यो को ही प्राप्ति हो सकती है।

भाव दीक्षा की प्राप्ति तो देव-नारकी को व संज्ञी तिर्यच को भी नही, मात्र मनुष्य को ही हो सकती है। इसमे भी युगलिक मनुष्यों को भी नही। (संमुर्च्छिम मनुष्य तो असंज्ञी ही होने से इनका भी प्रश्न भी नहीं) परन्तु इन सिवाय के मनुष्यों को हो सकती है।

स्पष्ट भाषा मे कहे तो,

पर्याप्ता+गर्भज ऐसे मनुष्यो को 8 वर्ष की उम्र होने पर उसके बाद ही भाव दीक्षा की प्राप्ति होती है। (वज्रस्वामीजी इसमे अपवाद है।)

इस तरह

सम्यक्त्व की प्राप्ति चारो गति मे हो सकती है,

देशविरति की प्राप्ति दो गति में हो सकती है,

सर्वविरति की प्राप्ति मात्र और मात्र मनुष्य गति मे ही हो सकती है।.

अब शिष्य ! तुम विचारों...

सम्यक्त्व की प्राप्ति उत्कृष्ट से असंख्य भव...

देशविरति की प्राप्ति उत्कृष्ट से असंख्य भव...

भावदीक्षा की प्राप्ति उत्कृष्ट से मात्र आठ भव मे....

आठवे भव मे अवश्य मोक्ष ही..... तो भाव दीक्षा की ताकत कितनी हो सकती है ?

कितने ही लोग जो सम्यक्त्व से या देशविरति से संतोष मान लेते है वे सब बिचारे कितने मुर्ख है.... वह अब स्पष्ट समझ मे आता है।

सर्व विरति अर्थात् 20000 कि.मी. दूर अमेरिका पहुँचने का सुपर फास्ट प्लेन !

देशविरति अर्थात् 20000 कि.मी. दूर अमेरिका पहँचुने के लिये

साईकल !

सम्यक्त्व अर्थात् 20000 की.मी. दूर अमेरिका पहुँचने के लिये चलने उपयोगी दो पैर !

चल कर जाना...

साइकल पर जाना...

या फिर सीधे सुपर फास्ट प्लेन मे जाना...

इसका निर्णय बुद्धिमान स्वयं कर ले ।

**शिष्य** : अब दूसरा प्रश्न..... एक भव में भाव दीक्षा की प्राप्ति कितनी बार ?

**गुरू** : जघन्य से एक ही बार.... (1 ही भव में)

उत्कृष्ट से 900 बार.... (1 ही भव में)

**शिष्य** : अब तीसरा प्रश्न.... निगोद से लेकर मोक्ष तक भाव दीक्षा की प्राप्ति कितनी बार ?

**गुरू** : बस ! गणित कर दो।

भाव दीक्षा के उत्कृष्ट से 8 भव है।

1 भव में उत्कृष्ट से 900 बार भाव दीक्षा की प्राप्ति है।

अर्थात्

1 भव में 900 बार भाव दीक्षा

तो 8 भव में कितनी बार ?

8 x 900 = 7200 बार

कोई आत्मा मोक्ष मे पहुँचे तब तक जघन्य से 1 बार.... मध्यम से 2-3-4-5-6.....7199 बार और उत्कृष्ट से 7200 बार भाव दीक्षा पा सकता है। उसके पश्चात् नीचे गिरे बिना उपर चढकर अवश्य ही मोक्ष पाता

है।

इस तरह ये तीनो उत्तर पूर्ण हुए।

अब इसमे ही हम गहराई में जाते है।

''एक भव में भाव दीक्षा की प्राप्ति जघन्य से एक बार होती है'' यह किस रीति से होता है ? यह देखते है।

1 भाव दीक्षा मिलने के बाद एक भी अतिचार लगाए बिना पूरी जिंदगी तक यह भावदीक्षा को टिका कर रखे, बढाते रहे...

2. भाव दीक्षा मिलने के बाद छोटे-बडे अतिचार लगने के बावजूद (बाद भी) भावदीक्षा का विनाश ना हो, फिर से आलोचना-प्रायश्चित्तादि के द्वारा उपर चढ जाते है। अथवा ये प्रायश्चित्तादि न किये हो तो भी भाव दीक्षा शिथिल होने के बावजूद समाप्त (मर) नही होती और इस ढंग से पूरी जिंदगी बीते...

3. भाव दीक्षा मिलने के बाद भाव दीक्षा की सर्वनाश की स्थिति आ जाए, तो भी सर्वनाश न हो... किसी भी ढंग से बच जाए व इस ढंग से पूरी जिंदगी भाव दीक्षा रहे...

4. भाव दीक्षा मिलने के बाद अनाचार स्वरुप कोई भी दोष के सेवन से भाव दीक्षा समाप्त हो जाए व दूसरी बार पूरी जिन्दगी भर फिर से भाव दीक्षा नही पाएँ...

इस तरह चार प्रकार से ऐसा बनता है।

एक भव मे जघन्य से 1 बार भाव दीक्षा की प्राप्ति होती है।

1. धन्ना अणगार को भाव दीक्षा पाने के बाद छोटासा भी अतिचार लगा नही, 'नित्य चढते परिणाम', यह उनका विशेषण है। इस तरह भाव दीक्षा के बाद सम्पूर्ण निरतिचार चारित्र जीवन जीनेवाले मे लाखो आत्माओं मे नं. 1 में आते है।

2. संयम जीवन मे छोटे-बडे अतिचार लगते है। मात्र संज्वलन कषाय का ही उदय इसमे भाग अदा करता है, लेकिन यदि अनाचार न लगे,

संजवलन के अलावा कोई भी कषाय का यदि उदय न हो तो समझना कि ये दूसरे नम्बर मे गिना जायेगा।

आज तुम कोई भी पति पत्नी को पूछो कि 'उनके लग्न जीवन मे छोटे भी झगडे न हुए हो, ऐसा बना है क्या ?'

99% लोग 'ना' कहेंगे । नहीं बोलना-बोलचाल कर पियर जाते रहना-धमकी-मारा-मारी.... ऐसा-ऐसा बहुत, लेकिन तलाक न हुआ हो, किसी भी ढंग से आपस में समाधान कर लेते है।

उसी तरह भाव दीक्षा के बाद भी ऐसा बनता है। इसमे अतिचार लगते है, दोषो का सेवन होता है... इससे भाव दीक्षा मलिन होती है, लेकिन इसमे भाव दीक्षा समाप्त नही होती।

अतिचार यह भाव दीक्षा मे होते झगडे जैसा है।

अनाचार यह भाव दीक्षा मे होता तलाक है।

झगडे भी दो ढंग से शान्त होते है।

(1) समझकर...

(2) समय बीतता जाए, झगडे शांत....

इसमे पहला तो ठीक है।

लेकिन दूसरे मे फिर से झगडा होने की शक्यता ज्यादा है।

उसी तरह

भाव दीक्षा में अतिचार लगते है, लेकिन यदि आलोचना-प्रायश्चित के द्वारा उसे दूर करने मे आवे तो यह शांति... यह समाधान प्रथम जैसा है!

लेकिन आलोचनादि न करने में आवे तो किये हुए अतिचार काल पसार हो जाने के बाद शांत हो ही जाते है.... यह शांति दूसरे प्रकार की है। इसमे अन्दर तो इन अतिचारो का संस्कार रहा हुआ ही है व इन्हे भविष्य में निमित मिले, तो वापस जाग्रत होनेवाले ही है.... लेकिन इतना पक्का है कि यह सब झगडे है, तलाक नहीं है। अर्थात् लग्न तो चल ही रहा है,

गिना जायेगा।

अब इसके संदर्भ में देखते है

वर्षो के संघर्ष के बाद मुमुक्षु को दीक्षा की सम्मति मिलती है। तब उसका आनंद अजब ही होता है। दीक्षा में आए हुए हरेक विघ्न के अवसर पर इसने आँसुं बहाए होंगे। यह पीडा उसे दीक्षा की प्राप्ति के वक्त खूब काम आती है।

सद्‌गुरु जब खडे होकर मुमुक्षु के हाथ मे ओघा प्रदान करते है तब उनका भाव खूब-खूब उछलता है। ''**तीन लोक का साम्राज्य मेरे हाथों मे आ गया है**'' ऐसे भाव उसके मन में उछलते ही रहते है। तथा बाहर से उसे नाचना आवे या नही भी आवे, लेकिन ये मन रुपी मोर ती खूब -खूब-खूब ही नाचता है.... इसलिये पूरी शक्यता है कि उस समय एक-दो मिनट के लिये या मात्र 30 सेंकड के लिये भी उस भाव दीक्षा की प्राप्ति हो जाती है।

**शिष्य** : लेकिन ऐसे ओघे तो अनंत बार लिये है।

**गुरु** : इसकी कहाँ मनाई है ? लेकिन ऐसा एक ओघा तो आनेवाला ही है कि जो ओघा भावदीक्षा को ले आता है और वह ओघा यही क्यो न हो सकता ? हमे तो ऐसा ही मान कर चलना है

और

1 वर्तमान काल में दीक्षा लेनेवाला लगभग शहरी है। शहर की मौज-शौक आदि में अनुभववाला है..... फिर भी दीक्षा लेने को तैयार होता है ..... किस लिये ? वह गाँव का गवार नही है।

2. ये मुमुक्षु लगभग शिक्षित है, बी.कॉम, एम.कॉम, सी.ए, एम.बी.ए वगैरह-वगैरह डिग्रीया पाने के बाद भी दीक्षा लेनेवाले है। ऐसे लोग किस लिये दीक्षा लेते है ? वे अनपढ नहीं है जो किसी की बातों मे आ जाए।

3 ये मुमुक्षु लगभग धनी (श्रीमंत) है। करोडोपति अरबोपति घरो के संतान है। आखिर मध्यम वर्ग के है लेकिन संसार के मौज-शौक के लिये पूरे सक्षम है। अपार समृद्धि छोडकर किस लिये दीक्षा लेते है ? व गरीब

नही है।

4. ये मुमुक्षु सब समझते है कि ''हमे दीक्षा के बाद क्या करना है?'' एक तरह से बहुत सोच-समझकर दीक्षा लेते है। पूरी जानकारी पूर्वक दीक्षा लेते है।

5. हजारो मुमुक्षु प्रभु के पास दीक्षा की प्रार्थना करते-करते कंपते-कंपते (थर-थराते) रहते है। हजारों मुमुक्षु परिवार को मनाने के लिये भयंकर संघर्ष में मा-बाप की मार भी खाते है। रुम मे बन्द भी किये जाते है। धमकीओं के संघर्ष मे जीते है। बहुत लम्बे समय तक राह देखते है.... और अंत में विजय की प्राप्ति कर वे दीक्षित बनते है।

उसमे यह दीक्षा दिन का माहौल !

हजारो की तादादमें जनसमुह !

संवेदन पैदा ही कर दे, ऐसा संगीत व ऐसे गीत।

पूरा वातावरण ही ऐसा कि दीक्षा लेनेवाले को इस वक्त एक-आधी मिनट के लिये भी भाव दीक्षा की र्स्पशना हो जाये...। एसी शक्यता बहुत होती है। उसमे कोई आश्चर्य भी नही है ।

और ऐसा भी हो तो, इसके 8 भवो मे से एक भव की गिनती। हो जाती है, फिर बाद में पूरी जिंदगी उसके पास भाव टीका रहे या ना टीका रहे।

रजोहरण लेते वक्त, नाचते वक्त यदि इन्हे भाव दीक्षा प्राप्त हो जाये तो यह उसकी पहली बार की भाव दीक्षा की प्राप्ति है।

अब देखो संज्वलन कषाय के उदय से उसमे अतिचार कैसे लग जाते है? फिर भी इसकी भाव दीक्षा टूटती नही, सिर्फ बीमार होती है।

मुमुक्षु को उठाकर स्नान के लिये ले जाया गया। वहाँ अन्दर केमेरा वाला, मूवी वीडीयो उतारनेवाले तैयार ही थे। मुमुक्षु का मन सहज ही यह फोटो मुवी के प्रति ललचाया व उसने मुँह पर कृत्रिम आनंद लाने की कोशिश की, यह है संज्वलनोदय!

यह भाव दीक्षा के साथ झगडा कहा जायेगा !

तुरन्त ही उसको पश्चाताप हुआ। अरे रे ! मुझे ऐसा मोह नही करना चाहिये व उसने दोनो हाथों से मुह भी ढक दिया।

यह हुआ झगडे का समाधान !

फिर नूतन दीक्षित को स्टेज पर लाने में आया। क्रिया मे धूप-गरमी आदि होने से मुमुक्षु अस्वस्थ बना। जल्दी क्रिया पूरी हो तो ठीक.... विचार आया।

यह हुआ भावदीक्षा के साथ झगडा !

वहाँ तो सद्गुरू की हितशिक्षा शुरु हो गई। उसको उत्तम कोटी की वाचना दी। नूतन दीक्षित गद्-गद् हो गया। धूप-गरमी सब भूल गया....

यह हुआ झगडे का समाधान !

क्रिया के बाद दर्शन करने ले गए। स्तवन का आदेश नूतन को देने में आया। 'सबको अच्छा लगेगा' ऐसे अहंभाव के साथ सुरीले कंठ से स्तवन गाया.....

यह हुआ भाव दीक्षा के साथ झगडा !

चालु स्तवन में ही नूतन भाव विभोर हो गया। अहंभाव का विचार ही चला गया, आंखो में अश्रुधारा चली....

यह हुआ झगडे का समाधान !

मंदिर से उपाश्रय आते वक्त गरम-गरम डामर के रोड पर चलने का अवसर आया, नूतन को आर्त्तध्यान हुआ, जल्दी से चला...

यह हुआ भाव दीक्षा के साथ झगडा !

उपाश्रय पहुँच कर पाट पर विराजमान सद्गुरु के पास नूतन पहुँचा। अपने अनंतोपकारी दीक्षादाता की गोद में मस्तक रख कर वह खूब खुश हुआ। गुरुने उसे शाबाशी दी...

यह हुआ समाधान !

'आओ !, गोचरी मांडली में। तुम्हारे हाथो से सब को वपराओ...' कह कर बडे साधु नूतन को मांडली में ले गये। 35 साधुओं की विराट मांडली को देखकर नूतन को आनन्द हुआ। उसके हाथ में पात्रा दिया गया, गुलाब जामुन से भरा हुआ ! ''लो सबको वपराओ।''

नूतन ने सबको परोसा, लेकिन खुद से कभी भी उपवास नही होता है। आज खूब भूख लगी हुई है, गुलाब जामुन उसकी मन पसन्द चीज... उसको मालूम है आज यह निर्दोष मिलेगी, कल तो निर्दोष नही ही मिलेगी और दोषित तो मुझ से नही वापरा जायेगा.. यह सब आहार के विचार में उसका मन फंस गया.....

यह हुआ भाव दीक्षा के साथ झगडा !

इशान कोणे में नूतन नवकारवाली गिनने के लिये बैठा। नमस्कार महामंत्र की आराधना मे लीन बन गया। खुद को मिली दीक्षा के विचारों मे गौरव अनुभव करने लगा।

यह हुआ समाधान !

बोलो, अभी तो ओघा लिया है व उपाश्रय में पहुँचकर नवकारवाली गिनी तब तक नूतन की अपनी भावदीक्षा रुपी पत्नी के साथ कितने छोटे-बडे झगडे व कितने सब समाधान हो गये न ? इसमे इसकी भाव दीक्षा मर नही जाती। इसलिये ही उसका गुणस्थानक अकबंध ही रहता है। मात्र इसमे उतार-चढ़ाव आते है।

समझो कि 150 मंजिल की एक इमारत है। इसका लिफ्टमेन हर समय लिफ्ट में उपर-नीचे, उपर-नीचे चढ-उतर करता रहता है, लेकिन वह डेढसौ वी मंजिल पर हो या पहली मंजिल पर हो, तो भी वह कौनसी बिल्डींग में है? इस प्रश्न के उत्तर में एक ही जवाब आयेगा कि 'वह उसी बिल्डींग में है।'

इस तरह भावदीक्षा भी एक बडी बिल्डींग है। उसके असंख्य मंजिल है। असंख्य अर्थात असंख्या! जो जीव इस बिल्डींग में एक बार प्रवेश कर-कर इसके असंख्य मंजिल पर ऊपर-नीचे चढ-उतर करता रहता है वह उपर-

चढे या नीचे उतरे, तब भाव दीक्षा नाम की एक ही बिल्डींग में कहा जायेगा।

फिर से याद कर लो...

जब तक मात्र संजवलन कषाय का ही उदय होता है तब तक जीव कितना भी नीचे उतरे तो भी वह भाव दीक्षा ही है... यह बात तय मानना।

जैसे

बहुत जीवों को ऐसा घटित होता है कि पूरे जीवन बहुत अतिचार लगते रहते है व उनका निराकरण भी होता रहता है....

इनकी भाव दीक्षा टूटती नही।

तब यह सब दूसरे प्रकार में 'पूरी जिंदगी में मात्र एक बार ही भाव दीक्षा की प्राप्ति वाला' गिना जायेगा।

भाव दीक्षा के समाप्ति के बहुत नजदीक आने के बावजूद भी भाव दीक्षा समाप्त न हो, बच जाये, उसे पूरी जिन्दगी भाव दीक्षा टीकी रहे, जिसे लोकोक्ति भाव मे 'मरते-मरते बच गये' कहा जाता है। ऐसा जीव तीसरे प्रकार में आकर जिंदगी में मात्र 1 बार ही भाव दीक्षा की प्राप्ति वाला गिना जायेगा।

(1) मेघकुमार को रात में विचार आया कि 'सुबह प्रभु को पूछकर चला जाऊँगा' लेकिन प्रभु की सीख के कारण वह रुक गया व बच गया।

(2) भवदेव ने विचार किया कि नागिला जीवित हो व दूसरी शादी न की हो तो साधु वेष छोड दूंगा। नही तो फिर साधु जीवन में ही रहुँगा। लेकिन नागिला के समझाने से रुक गये व बच गये।

**शिष्य** : लेकिन ये दोनो जन तो दीक्षा के भाव से गिर चुके है ना ?

**गुरु** : देखो, शास्त्र मे दोनो प्रंसगो का वर्णन किया है उसमे उनका छठ्ठा गुण स्थानक रहा, ऐसा तो स्पष्ट नहीं लिखा हुआ है। हा ! ऐसी शक्यता भी है लेकिन ऐसी भी शक्यता कि वे भले ही बहुत-बहुत कमजोर विचारवाले बन गये फिर भी वहाँ बहुत कमजोर भी भावदीक्षा हो सकती है। छठ्ठा गुणस्थानक नही गया हो।

मेघकुमार सीधे घर दौडे नही। लेकिन प्रभुजी को पूछने के लिये रुके हुए है। यह उनकी विशिष्ट भाव संपन्नता ही है।

भवदेव को साधुत्व के ऊपर धिक्कार नहीं था, नही तो वे नागिला को मिले या न मिले साधुत्व का त्याग कर देते। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उनको नागिला का विशेष राग है। यही राग उनको दीक्षा त्याग का विचार करावाता है। लेकिन मन मे स्पष्ट है कि यदि नागिला नहीं मिले तो बाद में दीक्षा ही.... तब उनमे भाव दीक्षा हो भी सकती है।

फिर भी ये तो मात्र दृष्टान्त ही बताये है।

यदि उनमे ऐसा न हो तो जिन में ऐसा हो उसे दृष्टान्त के तौर पर समझ लेना।

हालिक को एक बार भाव दीक्षा आई। फिर प्रभु के निमित्त से वह संपूर्ण समाप्त हो गई..... वह वापस घर चला गया। (भाव दीक्षा भी गई....) और उसने उस भव में फिर से यह भाव दीक्षा नहीं पाई। इसलिये वह चौथा प्रकार का-'पूरी जिंदगी में मात्र एक बार भाव दीक्षा पानेवाला' गिना जायेगा।

**शिष्य** : गुरुजी ! एक भव में भाव दीक्षा जघन्य से एक बार प्राप्त होती है और वह भी चार प्रकार से.... यह सभी चीजें दृष्टान्त चीजों के साथ आपने अच्छी तरह समझाया।

अब मुझे यह समझाइये की,

एक भव में भाव दीक्षा उत्कृष्ट से ९०० बार कैसे होती है ?

**गुरु** : एक बार भाव दीक्षा का संपूर्ण घात होता है और फिर बाद में इसी ही भव में भाव दीक्षा प्राप्त करता है तो यह कुल दो बार भाव दीक्षा हुई। वापस सम्पूर्ण घात+पुनः प्राप्ति इस ढंग से एक भव में ज्यादा से ज्यादा ९०० बार भाव दीक्षा प्राप्त होती है।

**शिष्य** : भाव दीक्षा का घात कैसे होता है ?

**गुरु** : यदि संज्वलन कषाय के अलावा कोई भी कषाय का उदय हो

तो भाव दीक्षा का घात गिना जायेगा। अर्थात् अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानीय या प्रत्याख्यानीय आदि मे से किसी भी कषाय का उदय हो तो भाव दीक्षा का घात होता है।

**शिष्य** : लेकिन गुरुजी! कौन से कषाय का उदय हुआ है इसका तो हमे देखने पर भी पता न ही चलता है न? यह तो विशिष्ट ज्ञानी ही जान सकते है न?

**गुरु :** सही बात है। हमको कौन से कषाय का उदय है इसका 100% निर्णय तो नही कर सकते है। परन्तु विशिष्ट ज्ञानी जो बता कर गये है तथा जहाँ उनकी बात के अनुसार दिखता है वहाँ भाव दीक्षा का घात समझना। ऐसे स्थानों में उनके वचनों के आधार पर हम भाव दीक्षा का घात का अनुमान तो निश्चय कर सकते है और यही प्रायः सच होता है।

**शिष्य** : ऐसे कौन से दोष है जिनके द्वारा हम भाव दीक्षा के घात का निर्णय कर सकते है?

**गुरु** : सामान्य से कोई भी दोष के सेवन में निष्ठुरता, निर्लज्जता, निर्भयता दिखती है तो समझ लेना कि यह भाव दीक्षा का घात हुआ है।

फिर भी निम्न दोषो के बारे में जानने से विशेष ज्ञान हो सकता है।

1. स्त्री के साथ चतुर्थ व्रत का संपूर्ण भंग।

2. सचित वस्तुओ को जानने के बाद भी आसक्ति के वश होकर उपयोग करना।

3. गुस्से से, ईर्ष्या से, खुद के दोष जाहिर हो जाने के भय से किसीका खून..... किसी के लिए तकलीफ खड़ी कर देना।

4. प्रत्यक्ष पैसा-सोना-चांदी वगैरह रखना। लेन-देन करना, बैंक में एकाउन्ट रखना.... वगैरह।

5. देवद्रव्यादि का अपने स्वार्थ के लिये उपयोग करना, खुदके उपयोग में आवे उसमे उपयोग।

ऐसे दूसरे भी खूब दोष है.....

हा !

जिसे कोई भी दोष का – पाप का सेवन **करने के पहले डर** लगता है

जिसे कोई भी दोष का – पाप का सेवन **करते समय डंक** रहता हो।

जिस कोई भी दोष का – पाप के **सेवन के बाद दर्द** होता हो....

इसमे इनकी भाव दीक्षा का घात नही होता है।

लेकिन जिसमे डर-डंक-दर्द कुछ भी नही है, उसमे भाव दीक्षा का भंग मान ही सकते है.... ऐसा स्पष्ट लगता है।

लेकिन भाव दीक्षा के घात होने के बाद फिर से दीक्षा वापस यही भव मे प्राप्त हो सकती है।

देखीएँ...

1. **नंदिषेण !** वेश्यागामी बने, भाव दीक्षा का भंग हुआ.... बारह वर्ष बाद फिर से भाव दीक्षा की प्राप्ति हुई।

2. **अषाढाभूति !** नटणी से शादी की। भाव दीक्षा का भंग हुआ... आखिर नाटक करते-करते ही केवलज्ञान !

3. **आषाढाचार्य !** परलोक की श्रद्धा ही गंवा बैठे। भाव दीक्षा ही नही परंतु भाव सम्यक्त्व भी गया। लेकिन देव की होशियारी के कारण फिर से वापस भाव सम्यक्त्व और भाव दीक्षा पाई।

4. **मेघकुमार !** रात्रि के विचारो से इनकी भावदीक्षा का भंग हुआ होगा, लेकिन प्रभुवीर के वचनो से वे पुनः भाव दीक्षा को पाए।

5. **प्रसन्नचंद्रराजर्षि !** सातवी नरक तक के पाप कर्म बाँध लिये। भाव दीक्षा का स्पष्ट रुप से घात। लेकिन बाद में वापस उपर चढे। वापस भाव दीक्षा पाकर तुरन्त ही केवलज्ञान को पाए।

6. **सिद्धर्षिगणि !** 17-17 बार बौद्ध मत को सच मान कर उसको

स्वीकार करने मे तत्पर बने अर्थात्। 17 बार भाव सम्यक्त्व से पतन हआ। अर्थात् इसके साथ-साथ भावदीक्षा का भी घात हुआ और 17-17 बार गुरु के समझाने से वापस जैन र्धम में स्थिर भी हुए। अर्थात कि 17 बार भाव दीक्षा (+भावसम्यक्त्व) को पाए।

7. **सिंहगुफावासी मुनि !** स्थूलभद्रजी के प्रति ईर्ष्या के वक्त, इसलिये ही गुरु के वचनों की अवगणना कर वैश्या के यहाँ जाते वक्त, वेश्या को देखकर रागी बनकर भोग सुख की इच्छा प्रकट करते वक्त, बाद में वेश्या के पास भोग सुख पाने के लिये नेपाल षट्काय की हत्या करके कामली लेने के लिए जाते-आते समय... कही न कहीं तो भाव दीक्षा का घात हुआ ही है।

लेकिन बाद में वेश्या के समझाने के कारण फिर से भावदीक्षा पाकर सच्चे मुनि बने।

8. **रहनेमि !** राजीमती के पास निर्लज्जबन कर भोग सुख की इच्छा प्रकट करते वक्त भावदीक्षा का घात हुआ, लेकिन बाद में राजीमती के समझाने से फिर से भावदीक्षा पाई।

9. **रज्जा साध्वीजी** की **499 शिष्याए !** गुरुणी के कहने से जिनवचन में अश्रद्धावाले बने। कच्चा पानी पीने लगे। भावदीक्षा खोई, लेकिन बाद में केवली बने गुरुबहन के समझाने पर सुधर गये.... फिर से भाव दीक्षा पाए।

10. **शैलक राजा!** भाव दीक्षा पाने के बाद शराब पीने लग गये। भावदीक्षा का घात हुआ, लेकिन मंत्री पंथक सेवा मे रहे। बहुत समय बाद शेलक को अपनी भूल का एहसासा हुआ। और उन्होने वापस जीवन सुधार दिया। यही ही (उसी) भव में वापस भाव दीक्षा पाए।

यदि जिनागमों में गहरे उतरोगे तो ऐसे तो ढेर सारे दृष्टान्त देखने को मिलेंगे, कि जिसमे भाव दीक्षा पाने वाले प्रस्तुत भव में गलत ढंग से भाव दीक्षा से पतन पाए और बाद में इसी भव मे ही उपर चढकर इसी भव मे मोक्ष भी पा गये।

हाँ ! यह सब अन्दर के भावों की दुनिया है।

एक ही भव में कोई 900 बार दीक्षा वेष छोडे और स्वीकार करे, यह शायद अशक्य भले ही लगता हो, लेकिन एक ही भव में भाव दीक्षा की 900 बार चढ-उतर तो हो ही सकती है। कारण कि भाव फटाफट चढते है व उतरते है। भाव के उतारने में समाज की शरम बाधित नही होती। वेष उतारने में या क्रिया उतारने में समाज वगैरह की शरम बाधित होती है। भाव तो मंदिर में भी, उपाश्रय में भी, विहार मे भी... लोच मे भी, तपश्चर्या मे भी, चालुवाचना मे भी, व्याख्यान देने में भी.... कही भी खत्म हो सकते है, वापस चढ सकते है।

शेयर (Share) बजार में सेन्सेक्स (Sensex) जितनी जल्दी से उपर - नीचे जाता है, उससे करोडो गुणा तेजी से ये भाव उपर-नीचे होते रहते है।

लेकिन सब से मुख्य बात ही यह हैं कि,

पूरे जीवन में मात्र एक बार भी यदि मात्र आधी मिनट के लिये भी भावदीक्षा की प्राप्ति हो जाये तो उत्कृष्ट से जो आठ भवकी गिनती करने की है उसमें से यह एक भव गिना जायेगा। अब भाव दीक्षा वाले ज्यादा से ज्यादा सात भव ही पसार करने के रहते है।

ऐसा भाव देशविरति के लिये नही है। इसे मानो कि एक भव में पा लिया, चढ-उतर करके 900 बार पा लिया, तो भी ऐसे ही संतोष हो जाएँ, ऐसा कतिपय शक्य नही है।

ऐसा ही सम्यक्त्व के लिये है।

इसके लिये ही प्रभु सर्व प्रथम दीक्षा का ही उपदेश देते है।

इसलिये ही सबसे प्रथम दीक्षा का ही उपदेश देने की देशनाविधि है (श्रोता प्रज्ञानपीय होना चाहिए)।

**इसलिये ही जैनों !!!**

**संसार में रह कर धर्म करने द्वारा संतोष मत मान लेना।**

भले कल्पेशभाई वी. शाह 50 करोड का साधर्मिक दान देते है।

भले ललितभाई धामी दो-दो तपोवन में सेकडो बालको में संस्कार-

सिचंन करे।

भले गिरीशभाई महाजन अहिंसा के श्रेष्ठ कार्य करे।

भले रमेशभाई मुथा ने 80 करोड का खर्च कर ऐतिहासिक चौमासा करवाया।

यह सब अच्छा ही है, बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है..... लेकिन भाव दीक्षा तो इन सब के सामने बहुत-बहुत महान है।

उत्तराध्ययन सूत्र में प्रभु ने फरमाया है कि

''जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए।

तस्स वि संजमो सेओ अदिंतस्स वि किंचण।''

जो पुरुष हर महिने दस लाख गायो का दान देता है, वह पुरुष भी यदि दीक्षा लेता है तो दीक्षा ही उसके लिये ज्यादा कल्याणकारी है, दीक्षा के बाद एक पैसे का भी दान न दे तो भी।

समझो

1 गाय = दस हजार रु !

10 लाख गाय = ?

तो. $\frac{\text{10 लाख गाय x 10 हजार}}{\text{1 गाय}}$ = 10 अरब रुपया

हर महिने 10 अरब अथार्त कि 1000 करोड रुपयो का दान देने के बजाय भी संयम जीवन महान है... यह प्रभु ने किस लिये कहा होगा ?

**शिष्य** : लेकिन गुरुजी ! यह सब लाभ तो भाव दीक्षा के है न ! इसके लिये द्रव्य दीक्षा लेने की क्या जरुरत है? अर्थात् इसके लिये संसार छोडने की, साधु के कपडे पहनने की, साधु जीवन की क्रियाओ का आचरण करने की क्या जरुरत है?

भरतचक्रवर्ती, मरुदेवा माता साधु वेष+साधु क्रिया के बिना ही सीधे

भाव दीक्षा को पाकर मोक्ष में गये है न ?

तो क्या सब लोग भी घर पर रहकर ही साधु वेष+साधु क्रिया बिना सीधे ही भाव दीक्षा नहीं पा सकते है ?

**गुरु** : जो ऐसा मानते है, ऐसा बोलते है, ऐसा प्रचार करते है, उनको तो साधु जीवन के दुःखों का सख्त भय है।

यह बात एकदम स्पष्ट है।

इनको गरमी की घबराहट है, इसलिए उनको ए.सी. पंखा चाहिये, **उनको विहार की गबराहट है, इसलिए उनको कार चाहियें।**

इनको लोच की घबराहट है, इसलिए इनको नाई चाहिए,

इनको ब्रह्मचर्य की घबराहट है, इसलिए इनको स्त्री चाहिए,

इनको मेले पणे की गंदगी की घबराहट है, इसलिए इनको स्नान चाहिए।

हा ! भले ही वे संसार मे रहे, भले ही वे साधुवेष न पहने... लेकिन यदि वे इतना करने के लिये तैयार हो कि

1. ए.सी.... पंखादि सब कुछ बंद !

2. इलेक्ट्रीकसीटी से चलने वाले सब साधनो का उपयोग बंद !

3. स्नान बंद ! हाथ-पैर-मुंह धोने का भी बंद! भले पूजा न करे।

4. संपूर्ण ब्रह्मचर्य !

5. वाहनादि का उपयोग संपूर्ण बंद...

**शिष्य** : गुरुजी ! जरा रुकीए। इतनी सब प्रतिज्ञा यदि पालने की हो तो तब इस संसार में रहकर भी साधु ही बन जायेगा ना ?

**गुरु** : हा ! उसको यह ही करना है न! वेष संसार का, लेकिन भाव साधुत्व का! तो भले इस ढंग से करें।

**शिष्य** : गुरुजी ! वेष भी संसार का, क्रिया भी संसार की, मात्र भाव ही

दीक्षा का ! ऐसा ही उसको चाहिये, और वह शक्य तो है ही ना ?

**गुरू** : अरबो मे एक जन को ! बाकी ये तो खुदको ही ऊल्लू बनाने का धंधा है। इसमे नुकसान सिर्फ उसको नही, ये बिचारे जीवो को भी है।

बाकी तो तुम ही बोलो।

लाल मिर्च की हथेली भरकर मुँह में डाले तो घेवर की मिठास का अनुभव होगा क्या ?

श्मशान में लोमडीयाँ चिल्लाते हो, कौवे का-का करते हो, चिल्लाहट सुनाई देती हो, तो क्या यह मधुर संगीत लगेगा ?

डाक्टर नाडी में इन्जेकशन देता हो, तब पुष्पो का स्पर्श अनुभव होगा क्या ?

राक्षसी, भूतनी के जैसी दिखनेवाली कोई स्त्री को देखते-देखते अप्सरा के दर्शन जैसा आनन्द होगा क्या ?

उल्टी हो जाये, वैसी गंधको चारो ओर फैलाती ऐसी गटर में, मुँह डाल कर उसमे सेंट-अत्तर की सुगंध जैसी मस्ती मान सकते है क्या ?

नही ही ना !

शिष्य ! जैसी वस्तु होती है, वैसा ही अनुभव !

मिर्च खाओगे तो अनुभव तीखाश का ही !

श्मशान के शब्दो को सुनोगें तो अनुभव घबराहट का ही !

नाडी में इंजेक्शन लोगे, तो अनुभव अशाता का ही !

राक्षसी जैसी स्त्री को देखोगें तो अनुभव तिरस्कार का ही, आखिर उपेक्षा का ही।

गंध मारती गटर में मुंह डालोगें तो अनुभव छी..छी...छी.. का ही!

इस तरह

यदि सम्यक्त्व का वेष व क्रिया है, तो भाव सम्यक्त्व का ही आयेगा।

यदि देशविरति का वेष व क्रिया है, तो भाव देशविरति का ही आयेगा।

यदि सर्वविरति का वेष व क्रिया है, तो भाव सर्व विरति का ही आयेगा।

हाँ ! आयेगा ही, ऐसा पक्का नही है, अनंत काल से नही भी आवे ? लेकिन यदि आएगा तो **इससे ही, इससे ही , इससे ही।**

यह पत्थर पर लिखकर रखने जैसा है।

व्यर्थ ही टेढे मेढे रास्ते पर जाना मत!

**शिष्य** : यदि साधु वेष व साधु क्रिया से ही भाव दीक्षा आती हो तो मरुदेवा व भरतजी को इसके बिना किस ढंग से भाव दीक्षा आई ?

**गुरु** : इसका उत्तर तो मैने दे ही दिया है। ऐसा तो करोडो-अरबो में एकाध जन को ही मिलता है और इसे पकड कर, नहीं चलना चाहिए।

कैसा आश्चर्य है कि सब के सब तीर्थंकर संसार त्यागी बने है। साधु वेश के धारक व साधुक्रिया के पालक बने है। ऐसे सब के सब तीर्थंकर का दृष्टांत सामने होते हुए भी उसकी उपेक्षा करके भरत-मरुदेवा के दृष्टान्त पकडने मे आते है।

अरे, तुम इतना तो मानते ही हो ना? कि तुमसे तो वो अजितनाथ आदि 23 तीर्थंकर ज्यादा समझदार थे। तो यदि तुम इतना समझ सकते हो, तो वे तीर्थंकर भी मरुदेवा भरत को याद कर के घर बैठे-बैठे ही साधना-आराधना करनेवाले नही बनते ?

लेकिन किसी भी तीर्थंकर ने ऐसा मार्ग अपनाया नहीं है। खुदके पास आनेवाले को ऐसा उपदेश भी दिया नही कि, ''साधु वेश स्वीकार करना जरुरी नही है, घर रहकर आराधना करो, इसमे ही भाव दीक्षा आ जायेगी....''।

क्यो ऐसा उपदेश नही देते है ? क्योंकि वे स्पष्ट जानते ही है कि साधुवेश व साधु क्रिया के बिना भाव दीक्षा प्रायः तो शक्य ही नहीं है। इसलिये भाव दीक्षा के लिये तो ये दो को तो अवश्य स्वीकार करना ही पडता है।

और देखो ना.....

प्रभुवीर के पास नंदिषेन दीक्षा लेने आए, प्रभु तो केवलज्ञान से जानते ही थे कि यह दीक्षा छोडेगा। अर्थात् कि वेष+क्रिया... छोड देंगें.... और उसमे कितना खराब दिखेगा?

लोग कहेंगे ''भगवान के शिष्य वेश्यागामी बने....''

लोग कहेंगे ''राजगृही नरेश का लडका पतित बना...''

तो भगवान को इन्हे साधु वेष+साधु क्रिया न देनी चाहिए न?

क्या प्रभु ने ऐसा किया ?

नही ! कारण ? कारण यही होगा के श्रावक वेष व श्रावक क्रिया में भाव दीक्षा शक्य नहीं होती और भाव दीक्षा की कीमत तो बहुत-बहुत-बहुत है। इसलिये प्रभु ने इनको दीक्षा वेष लेने दिया! भले बाद में इनका पतन होजाए। लेकिन एक बार दीक्षा वेषादि द्वारा इनमे भाव दीक्षा तो आ जाये।

**शिष्य** : आप यह जो नंदिसेन का दृष्टान्त दे रहे हो, उसे सोचते हुए तो आपकी बात योग्य लगती है लेकिन यह आपका विचार है? या शास्त्र मे ऐसा कहीं लिखा हुआ है?

**गुरू** : भाग्यशाली ! शास्त्र में न लिखा हुआ हो तो भी शास्त्र के पदार्थो के साथ विरोध न आवे, इस ढंग से आगे-पीछे का विचार करके जो चिंतन करने मे आए, वह शास्त्र मान्य ही पदार्थ है।

इसके अलावा तुम्हे शास्त्र पाठ चाहिए, तो सुनो ! नंदिषेन के लिये नही, लेकिन हालिक खेडुत के लिये भी यह पूरा विषय गुरुतत्त्वविनिश्चय ग्रंथ मे महोपाध्यायजीने बताया हुआ है।

उसका सार इस प्रकार है कि,

प्रभु ने गौतम स्वामी को हालिक खेडुत को प्रतिबोध करने के लिये भेजा। अब यदि गौतमस्वामीजी उसे सम्यक्त्व दिला दे तो भी उसमे मोक्ष

का बीज तो बोया हुआ ही गिना जायेगा। फिर भी प्रभु ने यह सम्यक्त्व रुपी बीज से संतोष नही माना, कारण कि सम्यक्त्व यह सामान्य बीज है, जब कि भाव दीक्षा यह विशिष्ट बीज है। (सम्यक्त्व उत्कृष्ट से असंख्य भवो में मिलता है न ? जब कि भाव दीक्षा मात्र आठ भव में ही....)

अब यह विशिष्टबीज का सिंचन प्रभु को करवाना है, इसलिये प्रभु ने गौतमस्वामी द्धारा हालिक को दीक्षा दिलवायी।

प्रभु जानते है - देखते है कि ''हालिक तुरन्त ही दीक्षा छोड देने वाला है उत्प्रव्रजित बनने वाला है, फिर भी प्रभु इसको दीक्षा दिलाते है।''क्यो ? '' क्योंकि इसके द्धार उसमें भावदीक्षा रुपी विशिष्ट बीज का सिंचन हो जाता है ?

**शिष्य** : लेकिन इसके लिये साधुवेष देने की क्या जरुरत है? ऐसे ही भाव दीक्षा का सिंचन नही हो सकता था ?

**गुरु** : यह ही तो मैं तुझे पूछता हूँ कि यदि साधु वेष के बिना साधु क्रिया के बिना भाव दीक्षा बोने की क्रिया हो जाती। तो प्रभु इसको वेष न दिलवाते ना? गौतमस्वामी को कह देते कि दीक्षा का वेष न देकर मात्र उपदेश ही देना। इसके द्धारा उसमे भाव दीक्षा प्रगट हो जायेगी।

उस बिचारे के सिर पर उत्प्रव्रजित का कलंक न लगता।

गौतमस्वामी के सभी शिष्य केवली ही होते है, ऐसी गौतम की महिमा इस एक दृष्टान्त के कारण टूटती है कि गौतमस्वामी के इस शिष्य को केलवज्ञान तो न ही हुआ, लेकिन घर भाग गया...

ऐसा सब भगवान क्यों स्वीकारते?

फिर भी भगवान ने स्वीकारा ना?

इसका मतलब भी स्पष्ट ही है कि

* हालिक को साधु वेष, साधु क्रिया दिलाने से ही भाव दीक्षा हो सकती थी। उसके सिवा नहीं।

* सम्यकत्व की तुलना में भावदीक्षा मोक्ष का विशिष्ट बीज है, बहुत

विशिष्ट बीज है। इसलिये ही प्रभु को मात्र सम्यक्त्व से संतोष नहीं हुआ। भावदीक्षा के लिये तत्पर बने। और इसलिये साधु वेष दिलवाया ही। भले बाद में चौवीस घंटे में वह छोड दे।

**शिष्य** : साधुवेष लेने के बाद यदि भविष्य में उसे छोड देने का समय आनेवाला हो तो भी साधुवेष क्या लेना चाहिए? आजकल हर एक मुमुक्षु की कुंडली ज्योतिषी को बताने मे आती है तथा ज्योतिषी इन मुमुक्षुओं के लिये उनको स्पष्ट कहते भी होगे कि यदि यह दीक्षा लेगा तो बाद में वापस घर आएगा। इस कारण से मुमुक्षु व उनके परिवार वाले घबरा जाते है व दीक्षा रुक जाती है। इसके लिये आपको यह प्रश्न करता हूँ।

इस बारे में आपके मंतव्य (विचार) क्या है ?

**गुरु :** मेरे विचार का तो इसमे प्रश्न ही नही है। हमने अभी ही चर्चा कर ली है कि प्रभु ने नंदिषेण का पतन स्पष्ट देखने के बावजूद भी दीक्षा का वेष+क्रिया दी। हालिक का पतन स्पष्ट देखने के बावजूद भी दीक्षा रोकी नही। सामने से जाकर दिलवाई।

क्योंकि प्रभु ऐसा मानते है कि यदि भावदीक्षा मिल जाती है तो भविष्य मे होने वाले पतन की चिंता करनी नही चाहिए।

भावदीक्षा की प्राप्ति यह एक अरब रुपए की कमाई है। इसके बाद पतन यानि कि 5 करोड का नुकसान है। ऐसे सोचो तो 95 करोड का फायदा ही है। यदि तुम भविष्य में पतन रुपी नुकसान की कल्पना करके दीक्षा न लो तो हालाकि दीक्षा त्याग रुपी पांच करोड का नुकसान नही होगा।(कारण कि दीक्षा ली ही नही तो इसका त्याग करने का प्रश्न ही कहा आता है।) परन्तु दीक्षा की प्राप्ति रुपी 1 अरब का लाभ भी नही होता है?

बोलो

(1) 1 अरब का लाभ - 5 करोड का नुकसान = अंततः 95 करोड का फायदा।

(2) 1 अरब का लाभ भी नही, 5 करोड का नुकसान भी नही अंततः

शुन्य।

इन दोनों में से कौनसा विकल्प पंसद करोगे ?

जो मुमुक्षु अब भावोल्लास में है, दीक्षा लेने की भावना वाला है तो इसकी कुंडली के लिये ज्योतिषी कैसा भी बोले, इसको दीक्षा देनी चाहिए। इसके भावी पतन का विचार न करना।

बिचारी शादीशुदा स्त्री!

विचार करती है कि यदि मेरे पेट में संतान जन्म लेगा तो वह मरेगा भी ही। बिचारे को मरने का दुःख भोगना ना पडे इसलिए मुझे माँ नही बनना। मेरे पेट से कोई जन्म लेगा ही नही तो मरेगा भी नही !

इस स्त्री को पागल समझोगें कि समझदार ?

सब कहते है कि जन्म लेनेवाला तो मरेगा ही। लेकिन इस मात्र से जन्म रोका नही जा सकता ? तब यहाँ दीक्षा लेनेवाला समझो कि भविष्य मे पतन पाने वाला हो, तब भी सिर्फ इतने कारण से उसे दीक्षा लेने से रोकना नहीं।

दूसरी बात

आज के ज्योतिषीयों के लिये...

10 जगह एक ही कुंडली बताना। तुमको तरह-तरह के अभिप्रायः सुनने को मिलेगे।

अभी-अभी मेरा ही ताजा अनुभव ! दो महान ज्योतिषीयों को एक कुंडली बताई।

एक कहता है कि इसके जैसी उत्तम कुंडली मैंने देखी नही है।

दूसरा कहता है कि यह तो निश्चय ही दीक्षा के बाद पतन पायेगा।

क्या करना मुझे ?

दोनो मे से एक भी ज्योतिषी की भावना खराब नही है। लेकिन फलादेश करने में दोनो के विचारो मे जमीन-आसमान का फरक पड

गया।

आजकल जैसे शास्त्र की पंक्तियों के बारे मे देखने को मिलता है कि एक पक्ष इन पंक्तियों का कोई एक अर्थ करता है, दूसरा पक्ष इन्ही पंक्तिओं का बिलकुल ही अलग अर्थ करता है। बाद में कौन सच्चा, कौन झुठा ? इसका निर्णय तो हो ही नही सकता.... इस तरह इन ज्योतिषीयों मे भी है।

इसलिये

ज्योतिषीयो को बताने की भावना होती है तो भी इतना स्पष्ट रखना कि.....

1. मुमुक्षु यदि दीक्षा के लिये आतुर हो, वैराग्यादि गुण हो तो ज्योतिषीयों के चक्कर में नही ही पडना।

2. यदि ज्योतिषी को बताओ, तो ऐसे तैसे को न बताना। अनुभवी पीढ ज्योतिषीयों को बताना कि जो दीक्षा के प्रति अनुरागवाले हो।

3. यह यदि 'हा' करता है तो दूसरे किसी भी ज्योतिषी को बताना ही नही।

4. यह पहला ज्योतिषी ना कहे तो भी अपना निर्णय नही लेना। दूसरे को बताना। यदि यह भी ना कहे तो तीसरे को बताना। यदि यह हाँ कहे तो दीक्षा लेनी चाहिए ।

5. तीनों के तीन मना करे तो भी दीक्षा लेनी। भले ही कतिपय महिनो या कतिपय वर्षो तक दीक्षा पाली जाए और बाद में पतन हो जाए। भले ही वेष त्याग करना पड़े... लेकिन दीक्षा के समय भावदीक्षा का स्पर्श होने की पूरी शक्यता है। इसलिये मुमुक्षु में विशिष्ट बीज गिर जाता है। इसलिये मुमुक्षु का यह भव सफल!

**शिष्य** : यदि इस ढंग से दीक्षा देने के बारे में आप दृढ हो तो फिर मुमुक्षु को दीक्षा की तालीम किस लिए देते हो ? इसमे छः महिने, बारह महिने बिगाड़े जाए, उसके बाद तुरंत ही दीक्षा दे दो ! जितने ज्यादा समयतक

दीक्षा पाली जाये उतना ज्यादा अच्छा है ना ?

**गुरु** : तुम भी जबरदस्त हो। कैसे-कैसे प्रश्न खडे करते हो!

यदि तालीम दिये बिना झट-पट दीक्षा दे देते है तो निश्चय ही भाव दीक्षा रुपी विशिष्ट बीज का बोना हो जाता है, लेकिन तालीम का अभाव होने के कारण मुमुक्षु संयम जीवन कमजोरी से जीता है । कभी भविष्य मे पतन भी हो जाता है।

इसलिये भाव दीक्षा आई = 1 अरब की कमाई... लेकिन यदि बाद में पूरी जिन्दगी शिथिल जीवन जीए, तो कमाई चालु तो रहती है, लेकिन मोटी भाषा में बोले तो 1 करोड की कमाई ! जबकि यदि पतन भी पाए तो ते 1 अरब - 5 करोड = 95 करोड की!

इन सभी में फायदा जरुर है, लेकिन कम!

इसके बदले व्यवस्थित तालीम देकर दीक्षा दो, तो यदि उत्तरोत्तर चढते भाववाला जीवन जीएगा। अर्थात् कि हर वर्ष 1 अरब की कमाई अर्थात् कि 50 वर्ष के दीक्षा पर्याय में 50 अरब की कमाई!

अब बोलो,

50 वर्ष के दीक्षा पर्याय में 1 अरब + 50 करोड (हर वर्ष 1 करोड)..... अच्छा गिना जायेगा ?

या दीक्षा लेकर 1 अरब कमाई व 5 करोड नुकसान (दीक्षा त्याग) 95 करोड..... अच्छा गिना जायेगा?

या तालीम के बाद दीक्षा देकर 50 वर्ष में 50 अरब की कमाई.... अच्छी गिनी जायेगी ?

**शिष्य** : लेकिन आपने ही तो कहा कि पतन हो जाये तो भी कोई हर्ज नहीं है।

**गुरु** : अरे भाई ! पतन हमको इष्ट तो नहीं ही है। लेकिन पहले बताया। उस तरह पतन के भय के कारण यदि दीक्षा ही नहीं देते, तो वह

95 करोड का नफा भी गुमा देते है। इसलिये मैने कहा कि भविष्य में मानों कि निकाचित कर्मो से पतन होने ही वाला हो, तो भी 95 करोड तो मिल ही जाते है।

हम को प्रयत्न तो 50 अरब की कमाई करने वाला ही करना है, अर्थात् व्यवस्थित तालीम देकर मजबूत करके ही दीक्षा दिलवानी है।

लेकिन यह संभव न बने, तालीम देने के बाद भी, कभी पतन हो जाता हो... तो भी आखिर में 95 करोड तो मिलेंगे ही ?

शांति से सोचोगें, तो मेरा यह भावार्थ तुमको समझ में आ जायेगा।

**सारांश :**

1. दीक्षा बाद पतन हो ही नहीं, उत्तरोत्तर उत्थान ही होता रहे... इसलिये मुमुक्षु को व्यवस्थित तालीम देकर ही दीक्षा देनी (50 अरब का लाभ) !

2. समझो कि व्यवस्थित तालीम देनी शक्य न हो तो भी यदि वैराग्यादि गुण दिखते हो, तो दीक्षा देनी। दीक्षा के बाद तालीम दी जा सकती है इसमे कभी नफा कम भी होता है। तालीम न होने के कारण शुरुआत में दीक्षा जीवन में गडबडी (अव्यवस्थिता) भी होती है। यह शिथिलता रुप से घर बना देती है व पूरी जिन्दगी भर भी टिक जाती है। इसलिये बाद में दीक्षा जीवन में फायदा चालु रहता है लेकिन बडा फायदा नही। फिर भी यह भी योग्य ही है। (जब पहला विकल्प शक्य न हो तब) (डेढ अरब का लाभ)

3. समझो कि तालीम देने के बाद या तालीम बिना दिये दीक्षा दी जाएँ, तो भी यदि दीक्षा के बाद निश्चित पतन हो तो भी दीक्षा देनी। (95 करोड)

अभी भी इसमे बहुत विचार कर सकते है लेकिन अभी इतना पर्याप्त है।

**शिष्य :** भावदीक्षा की यह अद्भुत ताकत आपने बताई, लेकिन यह

परलोक सम्बन्धी, इसका इसलोक संबंधी, तात्कालिक फायदा क्या है ?

**गुरू** : श्री बृहत्कल्पभाष्य में एक कथा कहने में आई है।

एक युवक को दीक्षा की भावना हुई। दीक्षा लेने के लिये घर से निकला (पुराने जमाने में आज के समान ठाठ-बाठ से ही दीक्षाएँ होती है, वैसा नही था। किसी को भावना हो जाती तो वह सद्गुरु की खोज के लिये निकलता वे मिल जाते तो उनके पास दीक्षा ले लेता)। शाम के समय वह एक घर के पास पहुँचा। थक गया था, विचार किया कि, यहाँ ही रात को आराम कर सुबह आगे बढ़ूँगा।

'मुझे एक रात यहाँ रहने दोगे?' मुमुक्षु ने प्रश्न किया? 'रहलो, मैं घर मे अकेली हूँ। इसलिये तुम्हे बाहार चबुतरी पर सो जाना है।' घर में अकेली रहती युवान स्त्री ने जवाब दिया। उस स्त्री व व्यंतरदेव के बीच प्रगाढ सम्बन्ध थे। रोज रात को व्यतंर वहाँ आता, दोनो संसार सुख भोगवते। लेकिन उस रातको व्यंतर नही आया। स्त्री ने देर रात तक राह देखी आखिर कंटाल कर सो गई।

दूसरी रात को व्यंतर आया, स्त्री ने पूछा ''गतरात्री क्यो न आए?''

व्यंतर ने जवाब दिया, ''चबुतरी पर साधु नींद ले रहा था। उसके शरीर की पवित्रता (Aura) इतनी जोरदार थी कि दरवाजा खुला होते हुए भी मैं इस (Aura) को पछाडकर अंदर न आ सका।''

स्त्री विचार में पडी ''वह तो गृहस्थ था, साधु कहा था? लगता है व्यंतर मजाक कर रहा है।''

थोडे दिनों के बाद एक साधु वहाँ आए, 'रात को विश्राम करने दोगे?'

'हाँ ! करो, लेकिन चबुतरी पर...' अतिथि सत्कार करनेवाली स्त्री ने हाँ कहाँ। रात को विचार किया कि 'आज तो साधु सोया हुआ है इसलिये व्यंतर नहीं ही आएगा इसलिये राह देखने की जरुरत नहीं' इसलिये वह स्त्री शीघ्र सो गई।

थोडी देर बाद व्यंतर आया, स्त्री को उठाया.... ''क्युं सो गई?''

''अरे ! आप किस तरह आए ? बाहर तो साधु सोया हुआ है ? इसकी (Aura) से रुकावट नहीं हुई।''

''नही ! यह साधु नही है !''

''वाह ! वो संसारी आया हुआ था तो आपने उसको साधु कहाँ व यह साधु आया तो आप इसे असाधु कह रहे हो, ऐसा कैसे ?''

''सुनो ! वो मुमुक्षु था। षट्काय की रक्षा के परिणाम, पाँच महाव्रत के परिणाम उसमें प्रगट हो ही गये थे। उसको मात्र वेष बदलना बाकी था। इसलिये ही वह सद्गुरु के पास जाने के लिये निकला था। उसमे भाव दीक्षा थी, इसलिये उसकी पवित्रतम (Aura) को पछाड न सका।''

''जब कि इस साधु के पास साधु वेष है ही लेकिन अब वह घर जाने की इच्छावाला बन गया है। साधु वेष छोडने निकला है। इसलिये यह साधु मिट गया है... इसलिये इसकी पवित्र (Aura) है ही नही ! इसलिये मुझे इसकी कोई भी तकलीफ नही पडी।'' व्यंतर ने जवाब दिया।

भावदीक्षा का प्रत्यक्ष परचा कैसा है ? यह इस कथा से समझ में आता है। प्रंचड शक्ति के मालिक गिनेजानेवाले देव भी बिचारे, भावदीक्षा के सामने एकदम शक्तिहीन हो जाते है।

**शिष्य** : इस कथा से तो यह प्रगट होता है कि साधु वेष की कोई कींमत नहीं है।

देखो... मुमुक्षु के पास साधु वेष नही था। फिर भी भाव दीक्षा थी न ? इसका ही प्रभाव था न ? और उस साधु के पास साधु वेष था लेकिन भाव दीक्षा नही थी, तो वेष का कोई भी प्रभाव नही है ना ?

**गुरु** : भारी काम है तुम्हारा ? साधुवेष के प्रति तुम्हे इतना सब द्वेष क्यों है ?

**शिष्य** : गुरुजी ! मुझे तो साधु के वेष के प्रति अगाढ राग है लेकिन दूसरे लोग प्रश्न पूछ नहीं सकते.... मन में ही मुँझाते है... इसलिये इन सब के बदले में, मैं ही पूछ लेता हूँ। यदि मुझे ही साधु वेष या साधु क्रिया

अच्छी न लगती, तो आप का शिष्य ही नही बनता।

**गुरु** : हाँ ! यह बात सच्ची है।

देख वह मुमुक्षु भाव दीक्षा वाला था ना? और साधु वेष तो मुझे लेना ही चाहिये ऐसी इच्छावाला था ना? इसलिये ही साधुवेष को लेने के लिये घर छोडकर नीकल जाने का प्रयत्न भी इसके पास था ना?

तब तूं समझ ले,

''साधुवेष तो लेना ही चाहिये, ऐसी दृढ मान्यतावाला और इस लिये यथाशक्ति सभी प्रयत्न करने वाला जो हो, वही भाव दीक्षा वाला होता है।

उसतरह

उस साधु के पास हालाकि साधुवेष था लेकिन 'मुझे साधु वेष छोड देना है' ऐसी उसकी इच्छा व उसके लिये उसका प्रयत्न था। इसलिये उसके पास भाव दीक्षा नही थी।

इसतरह इस प्रसंग मे तो साधुवेष का + साधु क्रियाकी ही महिमा बढती है।

**जो आत्मा साधु वेष को + साधुक्रिया को अत्यंत आदरणीय मानता है व उसको पाने के लिये यथाशक्ति सभी प्रयत्न करता है, उस आत्मा के पास ही भाव दीक्षा होती है।**

**जो आत्मा साधुवेष का + साधुक्रिया का धिक्कार-तिरस्कार-उपेक्षा करता है व उसके त्याग के लिये प्रयत्न करता है, वह आत्मा भावदीक्षा खोदेता है।**

यह है जिनशासन का रहस्य!

**शिष्य** : गुरुजी ! मान लिया आपकी इस बातो को कि साधुवेष-साधु क्रिया स्वीकार करनी ही चाहिए। लेकिन जिनके पास भावदीक्षा न हो उनको यह दोनो दे सकते है? भावदीक्षा बिना इन दोनो से फायदा होगा?

**गुरु** : जरुर होगा, भले ही मिथ्यात्वी हो, भले ही उसमे भावदीक्षा न

हो... लेकिन

1. वह मुमुक्षु यदि ऐसा इच्छे कि, मुझे साधु बनना है

2. वह मुमुक्षु यदि साधु जीवन के मुख्य आचारो को पालने के लिये तैयार हो = सक्षम हो...

उ.त. चतुर्थव्रत का पालन...

सचित्त का संपूर्ण त्याग...

पंखा-लाइट आदि साधनो का स्वयं उपयोग न करना, चालू न करना...

लोच कराना...

वगेरह !

जैनो मे जो ऐसे आचारप्रसिद्ध है, कि 'ये आचार साधु पालते है, इसे जो पाले वह साधु कहलाते हैं' ऐसे मुख्य आचारो का पालन करने में यदि सक्षम होते है तो इनको अवश्य दीक्षा दे ही देनी चाहिए..

**शिष्य** : लेकिन यह तो द्रव्य दीक्षा ही न ? यह तो अनंत ओघो मे एक ओघा की बढोतरी ही ना ?

**गुरु** : नहीं! बाद में दीक्षा जीवन में यदि यह नूतन दीक्षित नीचे की बातों पर बराबर ध्यान देगा, तो इसे भाव दीक्षा प्रगट हो ही जायेगी।

**शिष्य** : कौनसी बातो पर ?

**गुरु** : दीक्षा लेते समय भले ही यह जीव मिथ्यात्वी हो, भावदीक्षित न हो,.. लेकिन दीक्षा के बाद उसे इतना सतत करते रहना, सद्गुरु द्वारा उसके पास इतना कराते रहना।

1. नूतन दीक्षित को सतत याद करना चाहिए कि ''मैने जो प्रतिज्ञा ली है, जो पांच महाव्रत वगैरह लिये है, इन सब में से मैंने आज कितने किये ? मेरे द्वारा कितना किया जाना बाकी है ? ऐसे कौन से आचार है कि जो मेरे लिये शक्य है, फिर भी मैं नही आचरता....

ऐसा रोज याद करना...

2. जो चारित्र संपन्न होते है, खुद से ज्यादा गुणो वाले हो... उनके प्रति बहुमान भाव-आदरभाव धारण करना। उनके प्रति स्नेहभाव-उपादेयभाव रखना...

3. अब तक संसारीपन मे या दीक्षा के बाद खुद ने जो कोई भी पाप मन से वचन से या काया से सेवन किया हो, उन सबको याद करके उनकी निंदा करना, मिच्छामी दुक्कड़म बोलना।

सतत यह विचारना कि ''यह सब मेरे से करने जैसा न ही था, मुझे नही ही करना चाहिए।''

4. गुरु के पास जाकर अपने सब के सब पापो की आलोचाना करना। अर्थात् कुछ भी छिपाये बिना मन के, वचन के, काया के सब पाप गुरु के आगे एकदम सरल बन कर प्रगट कर देना।

5. दिन भर जो कोई भी क्रिया करने में आवे उस हरेक क्रिया के अवसर पर (प्रतिक्रमण-पडिलेहण-गोचरी-स्वाध्याय-वैयावच्च-वगैरह) प्रभु को याद कर उनके प्रति जोरदार बहुमान भाव उत्पन्न करना कि ''वाह ! प्रभु ने कितना सुन्दर मजे का धर्म हम सब को बताया है।''

6. खुद अब तक जो जो आचार नही पालता हो, उन उपर-उपर के आचारो के लिये विशेष श्रद्धा रखनी। मतलब कि ऐसा सोचना कि ''यह आचार मुझमे नही है। लेकिन मुझे लाने है, मुझे इनको आत्मसात करने है।''

(उ.त. मुझे अब एकासना के बदले आयंबिल करना है, मुझे अब पांच घंटे के बदले सात घंटे स्वाध्याय करना है। मुझे अब पंचांग प्रणिपात के बदले सतर संडासा का भी उपयोग रखना है। मुझे अब दो गाथा के बदले पांच गाथा याद करनी है। मुझे अब टेका लेना भी बन्द करना है। मुझे अब मिष्ठान... नमकीन का संपूर्ण त्याग व न हो सके तो भी देश से भी त्याग करना है... वगैरह-वगैरह)

इन छ वस्तुओं की ताकत यह है कि

यह मिथ्यात्वी साधु

1. भाव दीक्षा को प्राप्त करेगा।

2. चारित्र मोहनीय के उदय से भविष्य में जो पतन की संभावनाएँ है, वो सब इन छ वस्तुओं की ताकत से रुक जायेगी, पतन नही होगा।

(निकाचित कर्म हो, तो अलग बात है! लेकिन ऐसा बहुत कम होता है व उसमे भी निकाचित कर्म भोगे जाने के बाद इन छ के प्रताप से फिर वापस उत्थान होत है... उ.त. नंदिषेण)

**शिष्य** : एक भव में एक ही बार भाव दीक्षा मिलती है यह अच्छा? कि ज्यादा बार ?

**गुरू** : एक बार पाकर गुमा दे फिर वापस न पाये.... तब तो यह खराब। इससे तो गुमा-गुमा कर फिर से भावदीक्षा पाता रहे, यह ही अच्छा...

**शिष्य** : देखीएँ, एक भव में पूरी जिंदगी तक सतत एक ही भावदीक्षा टीकी रहे, तो भी एक ही भव गिना जायेगा, इस ढंग से कुल 8 भव हो तब मोक्ष होता है !

दूसरी ओर कोई जीव मात्र 1 ही मिनिट के लिये पूरी जिंदगी में एक ही बार भावदीक्षा पाकर गुमा देता है, तो उसका भी एक भव तो गिना ही जायेगा व ऐसे भी आठ ही भव होते है, बादमें मोक्ष हो जात है।

तो फिर इन दोनो मे फरक क्या ?

यह बात दृष्टान्त से समझाता हूँ।

108 वर्ष की उम्रवाली आत्मा 8 वर्ष में भावदीक्षा को पाकर मृत्यु तक भाव दीक्षा टीकाती है तो भी उसको भावदीक्षा का एक ही भव।

और ऐसे 8 भव करता है, तो कुल 800 वर्ष जितना काल भाव दीक्षा मे रहा....

दूसरी ओर दूसरी आत्मा को कुल आठ भव मे हरेक-हरेक में 1 मिनट

भावदीक्षा रही... तो यह कुल मात्र में 8 मिनिट ही भाव दीक्षा रही।

अब दोनो का आठवें भव मे मोक्ष हो ही जाता है

तब 800 वर्ष भावदीक्षा में रहने का क्या फायदा ?

**गुरु** : जितना ज्यादा समय भावदीक्षा में रहने मे आवे, उतने उसके संस्कार ज्यादा गहरे पडेगे। और इसलिये भावदीक्षावाले भव उसको खूब जल्दी प्राप्त होगे।

भावदीक्षा वाले कुल भव भले ही आठ ही होंगे, लेकिन वे आठ जल्दी-जल्दी होना, या लम्बे काल मे होना, यह दो वस्तु विचारनीय तो है ही न।

उ.त. एक आत्मा एक भव मे लगातार 100 वर्ष तक भावदीक्षा मे रहा... तो उसके संस्कार खूब गहरे होगे। इस कारण आगे के भव में देव होकर तुरन्त तीसरे भव मे वापस भावदीक्षा पाएगा। वहाँ भी पूर्व के गहरे संस्कार के कारण भावदीक्षा लम्बे समय तक पालता है... इसलिए ऐसा होता है कि वह आत्मा मात्र 16 ही भव में कुल 8 भव भाव दीक्षा वाले पाकर 16 वे भव में मोक्ष चला जाएँ।

दूसरी एक आत्मा एक भव में भाव दीक्षा पाएँ-गवाएँ-पाएँ-गवाएँ-इसलिये उसको गहरे संस्कार नही होगे। इसलिये उसे पाँच-दस भव के बाद फिर से भावदीक्षा का दूसरा भव मिलेगा... वहाँ भी गहरे संस्कार न - होने से भावदीक्षा पाएँ-गवाएँ-पाएँ-गवाएँ । इसलिये उसके बाद तीसरा भव आने में पांच-सात भव निकल जायेगे।

संक्षिप्त में यह जीव 70-80 भवों में ऐसे भावदीक्षा वाले कुल 8 भव पाता है व इस तरह आखिर 80 वे भव में मोक्ष मे जाता है। इस तरह भाव दीक्षा के कुल भव भले 8 हो, लेकिन बीच-बीच के भव इसके बहुत बढ जाते है... ऐसा होता है।

किसी को ऐसा भी होता है कि एक भव में भावदीक्षा पाता तो है, लेकिन बाद में देव-गुर्वादि की आशातना या नियाणा वगैरह के कारण घोर पाप बांधता है और तब से इस पाप के कारण दुर्गतिओं में भटकता रहता है। तब कभी-कभी लाखो भव तक भी उसे भाव दीक्षावाला भव ही नही मिलता

है। जैसे लक्ष्मणा साध्वीजी! जिसने इस भव में भाव दीक्षा पाई लेकिन माया नाम का घोर पाप किया। तब 1 लाख भव उनके बढ गये। इसी तरह रुक्मिणी साध्वीजी का भी संसार बढ गया।

संक्षिप्त में भाव दीक्षा के संस्कार यदि जो जोरदार है तो भावदीक्षावाले को 8 भव जल्दी-जल्दी मिल जायेगे, जल्दी मोक्ष होगा। लेकिन यदि इसके संस्कार कमजोर हो तो इसके 8 भव जल्दी-जल्दी नही होंगे । बीच-बीच में भावदीक्षा बिना के बहुत-बहुत भव होंगे।

अब यदि भाव दीक्षा के संस्कार दृढ करने हो तो पूरी जिंदगी भावदीक्षा टीके कि आखिर ज्यादा से ज्यादा समय भाव दीक्षा टीके.... तो बहुत-बहुत अच्छा काम हो जाए...

यदि भावदीक्षा पूरी जिंदगी न टीके, बहुत कम समय टीके... तो इसके संस्कार कमजोर होगे। तब बाद में जल्दी भावदीक्षावाले भव आयेगे ही नहीं।

इसलिये यह विषय भी एकदम स्पष्ट है।

एक भव में भावदीक्षा 1 मिनिट के लिये हो, या 100 वर्ष के लिये हो। यह भव उन 8 भवों की गिनती में गिना तो जायेगा ही। लेकिन 1 ही मिनिट वाले की भावदीक्षा वाला भव जल्दी मोक्ष नहीं देगा। बीच-बीच में बहुत समय जायेगा। जबकि 100 वर्ष तक भावदीक्षावाले का भव जल्दी मोक्ष दिलायेगा।

और

8 भव तो उत्कृष्ट से बताये हुए है। जघन्य से मात्र 1 व मध्यम से 2 से 7... अर्थात् यदि 1 भव में लम्बे समय तक भावदीक्षा का धारक बनता है, उसे तो कभी इसी भव में मोक्ष मिल जाये, कभी भावदीक्षा वाले दूसरे या तीसरे या चौथे भव में मोक्ष मिल जाये, इसे 8 भव भावदीक्षा वाले करने ही नहीं पडेगे।

**शिष्य** : दीक्षा लेने के बाद उन भावदीक्षा के 8 भवों मे भी यदि इतनी बहुत उथल-पुथल है, तो फिर श्रावक या सम्यक्त्वी बन कर ही बैठे रहे

ना?

**गुरू** : वाह ! जितनी उथल-पुथल भावदीक्षा के लिये है, उतनी ही उथल-पुथल देशविरति-सम्यक्त्व के लिए भी है। बल्कि भावदीक्षा के लिए, उथल-पुथल 8 ही भव के लिये है! जबकि देशविरति+सम्यक्त्व की उथल-पुथल असंख्य भव के लिये संभवित है।वहां भी यह समझ ही लेना कि मात्र एकाध मिनिट के लिये सम्यक्त्वादि पाए तो इसके संस्कार दृढ नही बनेंगे। सम्यक्त्व वाले दूसरे-तीसरे भव जल्दी प्राप्त ही नही होगे। तो असंख्य भवो की पूर्ति तो कब होगी? (हा! यह उत्कृष्ट से ही है, जघन्य से तो 1 ही भव... यह अलग बात)।

इसलिये 1 भव मे लम्बे समय तक सम्यक्त्वादि टीका कर रखे तो सम्यक्त्वादि भव बार-बार जल्दी-जल्दी आएगे, तब असंख्य भव इस ढंग से पूरे हो जायेगे।

ध्यान रखो 9000 बार 1-1 भव में सम्यक्त्व पाए तो इसके संस्कार कैसे होगे, और तो भी ऐसे असंख्य भव भी होते है...

यही ही बताता है कि भावदीक्षा के लिये मेंहनत करना यह ही सर्व प्रथम बहुत-बहुत श्रेष्ठ है!

चलो,

शिष्य ! तुम्हारे बहुत सारे प्रश्नो का समाधान दे दिया है।

हालाँकि मुझे मालूम है कि बहुतो के मन में अभी भी बहुत सारे प्रश्न होगे ही। व ये आत्मार्थी जीवों को इन प्रश्नो का समाधान मिलता है, तो उनका आत्मकल्याण निश्चय होगा। लेकिन एक ही पुस्तक में सैंकडो प्रश्नों का समाधान देना शक्य नही होता। हालाकि हरेक के मन में कौन-कौन से प्रश्न है उसका भी मुझे अन्दाज नही है, इसलिए अभी इतने प्रश्नों का समाधान देकर रुकता हूँ।

आखिर,

मुमुक्षुओं को, आत्मार्थी जीवों को विशेष प्रेरणा !

यदि दीक्षा की थोडी भी भावना हो, तो

इधर-उधर के विचार करके कमजोर मत बनो,

समाज की डरावनी बातो से डर मत जाना,

दीक्षा छोड कर घर आए हुए लोगों के दृष्टांत देख-सुनकर मत चौकना....

कर लो साहस !

मात्र एक ही मिनिट के लिये भी यदि भावदीक्षा का स्पर्श तुम्हे हो जाये तो समझ लो करोडो की लोटरी लग गई।

बड़ा खजाना अचानक ही तुम्हें प्राप्त हो गया...

पहले बताई हुइ छ बातों मे यदि तुम दीक्षा लेने के बाद पुरुषार्थ करोंगे तो भावदीक्षा की प्राप्ति तुम्हारे लिये सरल बन जायेगी।

बाद मे कभी पतन भी हो तो क्या चिंता ! अरब की कमाई मे पांच करोड का नुकसान है। उसमे आगे तो नफा ही है !

कायरो का यहाँ काम नही है।

''शूरस्य जैन धर्मोऽस्ति, कायरस्य कदाऽपि न।''

उसमे भी

संविग्न-गीतार्थ सद्गुरुभगवंत यदि तुम्हे मिले होंगे...

प्रायः अच्छे संयमी यदि तुम्हारे सहवर्ती होंगे..

स्वाध्याय-संयम-स्वभाव का त्रिवेणी संगम यदि तुम को प्राप्त होगा..

तब तो लीला-लहर !

।। नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय।।

# परिशिष्ट-1
## असंख्य का स्वरुप

ऐसे तो चौथे कर्मगन्थ में असंख्य का स्वरुप व्यवस्थित समझाया है लेकिन यह सब ही यहाँ समझाना शक्य नही है इसलिये जाड़ी भाषा में (मोटे रुप से) यह इसका स्वरुप बताने में आता है

00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000
00000000000000000000000000000000000000000000

1 बडा पन्ना....

इसमें मानो कि 1 लकीर में 100 शुन्य आते है

ऐसी 100 लकीर 1 पन्ने मे आती है

इसलिये 1 पन्ने पर 10,000 शुन्य आते है

बोलो, एक को 10,000 शुन्य लगाए तो यह कितनी संख्या कहलाएगी? असंख्य कहलायेगी ? नही ही नही !

ऐसी 1000 पन्ने वाली 1 कॉपी......... इसी ही ढंग से शुन्य से भर दो.....

अब बोलो, कितनी संख्या हुई ? असंख्य हुई ?

यह जितनी संख्या होती है वह असंख्य के सामने शुन्य समान गिननी.

आशय यह है कि असंख्य यदि जो अमेरिका तक का 20000 की.मी. लम्बा विराट समुद्र है,

तो उपर की संख्या इस समुद्र के सामने एक बुन्द जैसी है.

देशविरति का या सम्यक्त्व के असंख्य भव हो सकते है (उत्कृष्ट से) उसमे असंख्य अर्थात् यह संख्या समझने की है

अब तुमको समझ में आयेगा कि भावदीक्षा व यह देशविरति वगैरह के बीच में जमीन-आसमान का अंतर है।

# परिशिष्ट-2

## पुस्तक में बताये गये विषयो के सम्बन्धी शास्त्र पाठ

**सम्मत्तदेसविरई पलियस्स असंखभागमेत्ताओ।**

**अट्ठ भव उ चरित्ते......**

**आवश्यक निर्युक्ति ||856||**

भावार्थ : क्षेत्र पल्योपम का असंख्यात में भाग मे जितने आकाश प्रदेश है, इतने असंख्यात भव सम्यक्त्व के व देशविरति के हो सकते है। भाव दीक्षा (सर्व विरति में) आठ भव ही हो सकते है। जघन्य से सब में एक ही भव...

(टीका के आधार पर भावार्थ लिखा है विशेष जिज्ञासा वालोको इस गाथा की टीका देख लेनी)

**तिण्ह सहस्सपुहुत्तं सयपुहुत्तं च होइ विरईय,**

**एगभवे आगरिसा होंती नायव्वा**

**आकर्ष :- प्रथमतया, मुक्तस्य वा ग्रहणम् ||857||**

**आवश्यक निर्युक्ति**

भावार्थ : पहली बार पाना अथवा तो जो चला गया हो उसे फिर से पाना वह, वह आकर्ष ! इसमे श्रुत-सम्यक्त्व और देशविरति के एक भव में 2000 से 9000 बार आकर्ष होते है। सर्वविरति के एक भव में 200 से 900 आकर्ष होते है।

(पृथक्त्व अर्थात 2 से 9 इस प्रमाण में अपने शास्त्रो की रुढी है)

**तिण्ह सहस्समसंखा सहस्सपुहुत्तं च होइ विरईए।**

**णावाभवे आगरिसा एवइया होंति नायव्वा ||858||**

**आवश्यक निर्युक्ति**

**इयं भावना-त्रयाणां त्वेकभवे सहस्त्रपृथक्त्वमाकर्षाणामुक्तं, भवाश्च**

**पल्योपमासङ्ख्येयभागसमयतुल्याः ततश्च सहस्त्रपृथक्त्वं भवति तैर्गुणितं सहस्त्राण्यसङ्ख्येयानीति।**

**विरतेः खल्वेकभवे शतपृथक्त्वमाकर्षाणामुक्तं, भवाश्चष्टौ, ततश्च शतपृथत्वं अष्टभिर्गुणितं सहस्त्रपृथक्त्वं भवति।**

**भावार्थ** : श्रुत सम्यक्त्व और देश विरति के उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यात वे भाग के समय जितने असंख्य भव कहे है। हरेक भव में उत्कृष्ट से 2000 से 9000 बार आकर्ष कहा है अर्थात असंख्य x 2000 से 9000 = हजारो असंख्यता उत्कृष्ट से आकर्ष संख्या होती है।

सर्वविरति के भव उत्कृष्ट से आठ कहे है। हर एक भव में उत्कृष्ट से 200 से 900 आकर्ष कहे है। इसमें 8 x शतपृथक्त्व (200 से 900) = 7200 उत्कृष्ट से सर्वविरति के आकर्ष होते है।

**तयलाभम्मि वि णिच्चं, सईए अहिगयगुणम्मि बहुमाणा।**

**पावदुगंछालोअणजिणभत्तीविसेससद्धाहिं ।।66।।**

**गुरुतत्व विनिश्चय - प्रथमोल्लास**

**भावार्थ** : भावदीक्षा की प्राप्ति न हुई हो तो भी (द्रव्य दीक्षा लेने के बाद)

1. नित्यस्मृति 2. संयमियो पर बहुमान 3. पाप की जुगुप्सा 4. पाप की आलोचना 5. जिन भक्ति 6. विशेष श्रद्धा

इन छह पदार्थो के द्वारा

**लब्भइ णिच्छयधम्मो, अकुसलकम्मोदएण नो पडइ।**

**तो अप्पमओ जुत्तो, एयम्मि भणंति जं धीरा ।।67।।**

**गु.त.वि. प्रथमोल्लास**

**भावार्थ** : भावदीक्षा प्राप्त होती है। पापकर्मो के उदय के द्वारा यह भावदीक्षा गिरतीं नही, अर्थात् यह दीक्षा के आचरण में अप्रमाद योग्य है।

(अर्थात दीक्षा लेनी, पालनी..... ये सब योग्य है। इसमें अप्रमत रहना)

(यह अर्थ संक्षिप्त में लिखा हुआ है। विशेष जिज्ञासा वालो को इसकी वृत्ति देखनी। आगे पुस्तक में हमने वृत्ति के आधार पर भावार्थ लिखे है।

**अष्टमचारित्रे सिद्धेरावश्यकत्वात्प्रव्रज्याया विशिष्टबीजत्वाद्भगवता श्रीमहावीरेण हालिकाय सा दापिता ,अन्यथा तद्दानं निरर्थकं स्यात्. सम्यक्त्वमात्रेणैव बीजमात्रस्य सिद्धत्वात्।।**

**गु.त.वि. गाथा 148 की वृति प्रथमोल्लास**

**भावार्थ** : आठवें भव के चारित्र में मोक्ष निश्चय मिलेगा ही। जिससे दीक्षा वह (सम्यक्त्वादि करते) विशिष्ट बीज कहलाता है। जिससे प्रभु वीर ने हालिक को दीक्षा दिलवाई। यदि दीक्षा विशिष्टबीज न होता तो वे उसे सम्यकत्व समान बीज देते। इसलिये प्रभु ने दीक्षा का जो दान दिलवाया यदि वह निष्फल ही होता, क्योंकि सामान्य बीज तो सम्यक्त्व मात्र से भी सिद्ध हो ही जाते है (लेकिन प्रभु ने मात्र सम्यक्त्व बीज न दिया, दीक्षा दी... यह बताता है कि यह दीक्षा विशिष्ट बीज है।)

**यो बुद्ध्वाभवनैर्गुण्यं धीरः स्याद् व्रतपालने।**

**स योग्य ; भावभेदस्तु दुर्लक्ष्यो नोपयुज्यते।। अध्यात्मसार।।**

**भावार्थ** : जो संसार की असारता को जानकर महाव्रतो के पालन में दृढ होता है, वह दीक्षा के लिये योग्य है। उनमे भावदीक्षा है की नही ? यह सब भावो के भेद तो हम जान नही ही सकते है इसलिये ही दीक्षा देने में इसका कोई उपयोग नहीं।

**गुर्वाज्ञापारतन्त्र्येण द्रव्यदीक्षाग्रहादपि।**

**वीर्योल्लासक्रमात्प्राप्ता बहवः परमं पदम्।। अध्यात्मसार**

**भावार्थ** : बहुत सारे आत्माए ऐसे है कि जिन्होने मात्र गुर्वाज्ञा के परतंत्र बन कर दीक्षा ली है ? यह दीक्षा द्रव्यदीक्षा ही थी,भाव दीक्षा नही। फिर भी धीरे-धीरे इनका वीर्योल्लास बढता गया (इसलिये भावदीक्षा पा गए) और बाद में मोक्ष पद को पाए।

# परिशिष्ट – 3

## (सर्वविरति की महिमा बताने वाले पाठ)

**न च राजभयं, न च चोरभयं, न च वृत्तिभयं, न वियोगभयं।**
**इहलोकसुखं, परलोकसुखं, श्रमणत्वमिदं रमणीयतरम्।।**

**भावार्थ** : यह साधुता कितनी बहुत सुन्दर है....

1. न तो राजा का भय 2. न तो चोर का भय 3. न तो आजीविका का भय 4. न तो वियोग का भय। यहाँ इस लोक में सुख है। इससे परलोक में सुख है।

**नैवास्ति राजराजस्य, तत्सुखं नैव देवराजस्य।**
**यत्सुखं इहैव साधोर्लोकव्यापाररहितस्य ।। प्रशमरति**

**भावार्थ** : लोकव्यापार से मुक्त बने हुए साधु को जो सुख है, वह सुख तो राजाधिराज को भी नही, देवराज को भी नही है।

**निर्जितमदमदनानां वाक्कायमनोविकाररहितानाम्।**
**विनिवृत्तपराशानां इहैव मोक्षः सुविहितानाम्।। प्रशमरति**

**भावार्थ** : अहंकार व काम को जीतनेवाले, वचन+काय+मन के विकारों से रहित, पर पदार्थ की अपेक्षा से रहित सुसाधुओं को तो इस धरती पर ही मोक्ष है।

**जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए।**
**तस्स वि संजमो सेओ, अदिंतस्स वि किंचणं।। उत्तराध्ययन**

**भावार्थ** : जो पुरुष हर महिने दसलाख गाये देता है। उस पुरुष को भी संयम ही कल्याणकारी, भले ही दीक्षा लेने के बाद यह कुछ भी न दे।

**जो सहस्सं सहस्साणं संग्गामे दुज्जए जिणे।**
**एगो जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ।। उत्तराध्ययन**

**भावार्थ** : भयंकर युद्ध में जो सेनापति दस लाख शत्रु सैनिको के उपर विजय पाता है उनके सामने जो आत्मा (दीक्षा लेके) अपनी आत्मा के उपर विजय पाता है। वह बहुत बडा विजयी है...

# परिशिष्ट - 4

## (संयम से संबंधीत गीत)

## धन ते मुनविरा रे

धन ते मुनिवरा रे, जे जिन-आणा पाले
राग-द्वेष ने दूर करीने, आतम शुद्धि भाले

धन ते.......1.

दुर्गति पडता राखे मुनिने, दश क्षान्त्यादिक धर्मो
शुभ भावथी पाले तेना दूर टले सवि कर्मो

धन ते.......2

## (1) क्षमा

दोष विना पण ठपको आपे गुरु, तेने जे सहेता
मूल्य विना मलती मिठाई, एवा भाव ने वहेता

धन ते.......3

मोटा के नाना मुनि ज्यारे कटुकवचन उच्चारे
मोक्ष मार्गे सहायक जाणी कोप न मनडे धारे

धन ते.......4

कोई जीव ने दुःख न देवुं ए निश्चय मन धारे
परदुःखदायी प्रवृति ने स्वप्ने पण नही धारे

धन ते.......5

साकर थी पण मीठा वचनो जेह सदा उच्चारे
पोते सहन करी ने सौनुं पृथ्वीने शणगारे

धन ते.......6

ठंडीथी ध्रुजता मुनिवर ने देखी स्वार्थ गमावी

निज कंबल तेने ओढाडे वत्सलभाव जमावी

धन ते.......7

धोम धखंता पथ पर गज पेरे जे धीमा चाले
शुभपरिणामनी अग्निमा जे कर्म अनंता बाले

धन ते.......8

कांटा के पथराथी पगमां लोही नी धारा वहेता
मुक्ति वधुना कंकुपगला मानी बहु हरखाता

धन ते.......9

चटका भरता डांस ने मच्छर, दूर कदी नवि करता
साधार्मिक भक्तिनो ल्हावो आमंत्रण दई लेता

धन ते.......10

ठंडु जल छे पापनुं वर्धक सुखशीलतानुं पोषक
उनाले जल उष्ण वापरी थाये कर्मना शोषक

धन ते.......11

## (2) मृदुता

महामासनी मध्य रात्रिमां काउस्सग्गध्याने रहेता
कर्म क्षपणनो अवसर जाणी जे मनमां बहु हसता

धन ते.......12

कटुवचन सुणी गुरुना, जेने हैये हर्ष न मातो
'कहो कहो ओ गुरुवर' कहेता, पाय पडी हरखातो

धन ते.......13

रत्नाधिक आवे तब तेने उभाथई सत्कारे
आसन दई सुखशाता पूछी उचित विनय अवधारे

धन ते.......14

कर जोडी शीश नामी गुरु आगल जे उभा रहेता,
गुरु मुखवाणी जिनवाणी सम निर्विकल्प जे ग्रहता

धन ते.......15

ज्ञान तणो अक्षर पण जेणे आप्यो ते गुरुवरनी
योगत्रिकथी यावज्जीव भक्ति करता भवतरणी

धन ते.......16

विराधना गुरुवरने दुर्लभबोधि पणुं ते पामे
प्रसन्न थाता गुरु जेनाथी ते करता हित कामे

धन ते.......17

विनय मूल छे जिनशासननुं, विनय मूल गुणोनुं,
विनय विनानो बहुश्रुतधारी, मडदुं जीव विनानु

धन ते.......18

गोचरी-पाटला-बेठक-लेखनी इत्यादिक वापरता
वडीलो लइले त्यार पछी गुरुशेष मानी जे लेता

धन ते.......19

बुद्धि-वाणी बल थी परने जे तृण गणी तुच्छकारे
मार्ग भ्रष्ट भारे कर्मी ते दुर्गतिना पगथारे

धन ते.......

अपकारी पर क्रोधी बनता, अज्ञानी बहु दीसता
सवधिम अपराधी क्रोध पर महाक्रोधी मुनि बनता

धन ते.......

सर्व प्रसंगे निजदोषो-पर गुणनु दर्शन करता

कूरगडु-मृगावती सम ते वेगे मुक्ति वरता

धन ते.......

उपकारी स्वजनों ने त्यागी दीक्षा लीधी वेगे,

संयम घातक गुरु द्रोहादिक दोष केम न त्यागे ?

धन ते.......

## (3) सरलता

मात कने जेम बालक तिम गुरु आगल खुल्ला थाता,

सूक्ष्म पाप पण लाज त्यजी गुरु ने विस्तर थी कहेता

धन ते.......

क्रोडमुल्यनुं एक बिंदु चमके नेत्रोमां जेने,

ए पश्चातापी मुनिवर ने मुक्तिवधु पण खोले

धन ते.......

वैरागी देखावा काजे, माया-मृषा नवि बोले,

'हु क्रोधी-कामी-इर्ष्यालु', कपट रहित जे बोले

धन ते.......

देव दुर्गति-मूक मानव-नरकादिक योनि भारे,

माया मृषां नु फलजाणी ने सरल स्वभाव ने धारे

धन ते.......

रात-दिन-संयम मां गुरु-लघु अतिचारो जे लागे,

एक-एक ने याद करी मिच्छामिदुक्कडं मागे

धन ते.......

जे मनमा ते वाणीमां ने, वाणी मां ते काये

सरल बनी मन-वचन-कायाथी शुद्धिना स्वामी सदाये

धन ते.......

यशकीर्तिनी लालचथी के गुर्वादिकना भयथी
गोपवता ना दोष कदीये, छेदादिकना भय थी

धन ते.......

अभिमानी जेम आप प्रंशसा करता कदी ना थाके,
तेम मुनिवर निजपापने कहेता लेश न रहेता वांके

धन ते.......

काम-क्रोध-इर्ष्या रसगारव-मदमायादिक दोषो
सुक्ष्मथी आतम दर्शन करता हरता कर्मना कोषो...

धन ते.......

## (4) मुक्ति

नीरस रसवती रस थी जमता, नीरस थई रसवती ने
निर्मलतम परिणतिना स्वामी, नमो निः संगीमति ने

धन ते.......

ग्लानादिकने उचित वस्तु लावी हेते वपरावे
भक्ति करी सवि साधुजननी वध-घट कुख पधरावे

धन ते.......

संयम परिणामोनी शुद्धि विगईभोजी नवि पामे,
एम मानीने अंतप्रान्त आहारार्थी तृप्ति पामे

धन ते.......

आसक्ति जागे तो पण जिनआणा मनमां लावी
कदी न लेता विगई-दोषित भोजन मन ने मनावी

धन ते.......

माता निज बालक खातर जीवन पण त्यागी देती
जग खातर मुनिवर जगमाता आसक्ति छंडंती

धन ते.......

एक बाजु भोजनादिक सुखो बीजी बाजु जिनआणा
शाश्वत सुखकर आणा त्यागी महामुरख कहेवाणा

धन ते.......

## (5) ब्रह्मचर्य

सन्मुख आवे नारी रुपाली तोये न नेत्रे भाले
तीर्ण ते ज तारक मुनि जगनो, जिनशासन अजवाले

धन ते.......

स्त्रीना शब्दनु श्रवण मात्र पण कामविकारक गणता
स्त्रीदर्शन शब्दादिक ज्यां थातुं ते वसतिने त्यजता

धन ते.......

माता-पुत्र पण पाप करतां, मोहथी घायल थाता
कान-नाक-पग-हाथ रहित वृद्धाने पण नवि जोता

धन ते.......

तालपुट झेर-तालवे अडवानी साथे हणनारु
लेशथी पण नारी परिचय साधुता अंत करारु

धन ते.......

कारण विण विगईभक्षक मुनि हितरक्षक जो धारुं
देवलोकथी स्थूलभद्र, धरती पर उतर्या विचारु

धन ते.......

रागथी स्त्रीदर्शन करतो मुनि दुर्गति दुःखडा तोले
वदंन माटे नालायक ते नेमिनाथ एम बोले

धन ते.......

वानर ने मदिरा पावा सम, विषय सुखोनी यादी
संयम-स्वाध्याये लीन बनी, संस्कारनी करे बरबादी

धन ते.......

## (6) शौच

जे दोषो परमां देखुं ते मुजमां प्रगटी दंडे
धर्मदासना वचन श्रद्दही दोष दृष्टि ने छंडे

धन ते.......

देह तणी सुखशीलताना योगे भटक्यो भव अनंता
कट्टर शत्रु मानी देह ने कष्ट बहु जे देता

धन ते.......

सातमी नरक ने मोक्ष तणा दुःख सुखनी मनडुं चावी,
शुभयोगोमां रमता मुनिवर दुर्गति दूर फगावी

धन ते.......

निष्कारण एक डग चाले तो पण अतिचारो पावे
जगव्यापी वीरकरुणस्पर्शी, कारण विण नहि जीवे

धन ते.......

लोभी धननी प्राप्तिमां संतोष कदी नवि पामे
स्वाध्यायादिक योगोमां मुनि तृप्ति कदी नवि पामे

धन ते.......

मेरु डगे ने चंद्रसूर्य विमानो अटके फरता
तो पण निष्कलंक संयमी नानी पण भूल नहि करता

धन ते.......

तप्त लोह सम श्रावक ने निजकाज कदी नवि सोंपे
'स्वयंदास' ए बिरुदधारी निजकाजे निज तन रोपे

धन ते.......

सुख शीलताथी वेषधारी जे साध्वाचार न साधे
मार्गभ्रष्ट भारे कर्मी ते पाप अनंता बांधे

धन ते.......

अविधिनु खंडन विधिपालन विधिबहुमान ने विधिमंडन
अजोड प्रवचन भक्तिधारी निश्चयथी करे भवखंडन

धन ते.......

आज लगी यमराजे मुनिना मरण अनंता कीधा
भावसहित जिनआण पाली मोत ने महात कीधा

धन ते.......

## (7) संयम

हलका देवो इच्छे पण अप्रमत्तने कदी नवि बाधे
संयमशक्ति अनुपम जोइ, सर्वप्रमाद ने काढे

धन ते.......

माताना खोले पोढया, बालक निर्भय बनी जाता
अष्टमातानी गोदे रमता, दुर्गतिथी न गभराता

धन ते.......

जेम वेपारी खोवाया रत्नो बारीकाइ थी शोधे
मारगमां तेम मुनि जीवों ने नजरे नजरे नोंधे

धन ते.......

मुखवस्त्रिका विण भाषक घातक षट्कायनो भाख्यों
ना बोले मुहपत्ती विना ते करुणासागर दाख्यों

धन ते.......

दोषित गोचरी शुभमतिनाशक, विषयकषायनी जननी
सूक्ष्म दोष पण परिहरी करता शुद्धगोचरी करणी

धन ते.......

पूंज्यां विण ज्यां दंड ग्रहातो, गच्छ ते त्याज्य गणाय,
सर्व वस्तु लेता मुक्ता त्यां जोइ प्रमार्जन थाय

धन ते.......

लघु-वडी नीति अविधिथी करता शासन हीलना पामे
बोधि दुर्लभता विराधना दोष थी मुनि विरामे

धन ते.......

धरती कंप, दुकाल ने युद्धादिक आपत्ति मोटी,
असंयम केरुं फल जाणी, साथे संयम कोटी

धन ते.......

प्रतिक्रमणादिक सर्वकियाओ विधिपूर्वक जे करता
देव जेम नाटकमां किरियामां लीनता ने धरता

धन ते.......

अगणित जीवो आ धरती पर भूख्या तरस्या सुता

एम विचारी करुणा लावी भीनी आंखो लुंछता

धन ते.......

## (8) सत्य

हास्य ने विकथा करता मुनिओ तिंदुकसुर नवि भावे
इन्द्रपूज्य बनता मुनिनुं जीवन सहुने शरमावे .

धन ते.......

समजु श्रावक अनर्थ दंडना पाप कदी नवि करतो
पंचमहाव्रती हास्य विकथा फोगट शीद न करतो ?

धन ते.......

स्वाध्यायादिक योगोथी प्रगटया जे शुभपरिणामो,
तेना मारक हास्य-विकथाना, स्वप्ने न करता कामो.

धन ते.......

अगीतारथ ने एक शब्द पण बोलवो शास्त्रे रोक्यो
शुद्ध गीतारथ पण कारण विण, मौनधरो अवलोक्यो

धन ते.......

''व्याख्याता तपसी स्वाध्यायी संयमी छुं हुं साधु''
आत्मप्रशंसा परनी निंदा करता जीवन विराधुं

धन ते.......

मन थी विचार्या विण बोले, ते असंज्ञी कहेवातो
बुद्धि त्राजवे तोली ने बाले, ते मुनिवर मलकातो

धन ते.......

साची पण परपीडाकारी वाणी झुट्टी भाखी

हित-मित-प्रीतिकारी वाणी साची जिनजी ए दाखी.

धन ते.......

मायाथी के हास्यथी, भयथी के परना आग्रहथी
सूक्ष्म मृषा पण जे नवि बाले, वचनसिद्धि संग्रहथी.

धन ते.......

हैया चीरता निष्ठुर वचनो जे निर्दय उच्चारे
कर्म राज जीभ छिनवी स्थावर नारक करीने मारे

धन ते.......

हितबुद्धि थी हितकारी पण कटुक वचन नोच्चारे
मुल्यवान पण सोनुं अग्नि तापित कोण स्वीकारे ?

धन ते.......

आज्ञा भंजक पण जे साधु, ससूत्र प्ररुपणा भाखी
ते भाषा भव तरवा नावडी, धर्मदासजी ए दाखी

धन ते.......

## (9) सर्वसंग त्याग

मुक्ति काजे सिंह साथे युद्धे चडवानी तैयारी
ए वैरागी मनंडु करे ना विषय सुखोनी यारी

धन ते.......

जिनशासन पामेला मुनिवर तुच्छ सुखे तो राचे
दश अच्छेरा झांखा करंतु ए अच्छेरु साचें

धन ते.......

निःस्पृहता भूषणथी शोभे निर्मल आतम जेनो

श्वासे-श्वासे वंदन करता आतम थाय मजेनो

धन ते.......

व्याख्यातृत्व के विद्वता लेखनशक्ति के कवित्व

शिष्यभक्त भोजन स्त्रीसक्त ने भवमंच नृत्यत्व

धन ते.......

धोला वस्त्रों मुनिना मनना मलिन भाव दर्शावे

शासन हीलना कामनावारक वस्त्रो जीवन दीपावे

धन ते.......

मलिन वस्त्र, विजातीय परिचय त्याग, विगइ-परिवर्जन

त्रण महारथि ब्रह्मचर्य नु करता नित्य समर्थन

धन ते.......

अन्तप्रान्त पण मात्राधिक वापरता वासना जागे

आलस, रोग, कषायादिक जाणी हितमित आरोगे

धन ते.......

संखडिस्थाने गोचरी काजे डगे पण कदी नवि मांडे

त्याग धर्म थी जग जनता ने समकीत दृष्टि पमाडे

धन ते.......

भोजन-भक्त ने तनु मूर्छाथी चौद पूर्वी पण भणता

भीषण भव संसार जाणी, निःसंग भावे रमता

धन ते.......

महासती जेम पारका पुरुषनु दर्शन कदी नवि करती

तेम मुनि निजसंयम रक्षार्थे लेवे न भक्त नी भक्ति

धन ते.......

आतमधनना चोर-लुंटारु, स्नेही-स्वजन ने जाणी
सर्वजीव पर स्नेह धरती वृत्ति मुनिनी वरवाणी

धन ते.......

संसारी पण नाम पोतानुं याद कदी नहि करता
दुर्घटनासम निज संसारी जीवन भूली जाता

धन ते.......

शिष्यनी चोरी पापनी टोली, जिनशासन नी होली
शिष्यलालसा दुर्गतिदायी मुनिवृत्ति अणमोली.

धन ते.......

शिथिलाचार ए प्रथम मूर्खता मुनिनिंदा बीजी मोटी
शिष्यादिक काजे मुनि निंदा करता भवनी कोटी

धन ते.......

गीतारथ आचारना पालक गुरु पर तन्त्री राजे
ते ज छे गुरुपदलायक शिष्यों गुरु बनता हितकाजे.

धन ते.......

मिष्ट नुं भोजन नारी दर्शन भूंडादिक पण त्यागे
स्वच्छंदता छोडी गुरु परतंत्री बनता हितरागे

धन ते.......

नरकादिकमां स्थापे जीव ने संनिधि नामे दोष
तल के बिन्दु मात्र पण संनिधि करता मुनिपद शोष.

धन ते.......

देव नृप श्रेष्ठि सवि जनता दास बने जेनाथी

ए निष्परिग्रहता गुणधारक मुनिवर भाग्यसंगाथी

धन ते.......

एक वधु मुहपत्ती राखी ते भटकाया भव मोहे

महानिशीथ वचने भव भीता, रहे अपरिग्रह राहे.

धन ते.......

ब्रह्मघाती छे कोमल वस्त्रो, वली सुखशीलता पोषे

जीर्ण-मलिन-स्थूल-अल्प मूल्यना वस्त्रो थी रहेता होशे

धन ते.......

खणवा काजे एक तणखलु करकंडु मुनि राखे

तो ये त्रण प्रत्येक बुद्धोनो मीठो ठपको चाखे

धन ते.......

आग लागे तो सवि उपधि सह नीकलता पल लागे

विण मांगे पण मलती वस्तु निष्परिग्रही त्यागे

धन ते.......

कान मां पडता धगधगता सीसाना रससम जाणे

आत्मप्रशंसा परनिंदाना वचनो न धरता काने

धन ते.......

सकल विश्वने कामणगारी निःसंगता निर्धारे

स्वप्ने पण तृणमात्र परिग्रह करता बहुभय धारे

धन ते.......

## (10) तप

पर उपकार काजे पण मुनिवर जे स्वाध्याय उवेरजे

गच्छाचारे निन्द्यो जाणी स्वाध्याये मन राखे

धन ते.......

पन्नवणादिक पाठ करे गच्छाधिपति पण राते

शास्त्र वचन जाणी पल पण न बगाडे फोगट वाते

धन ते.......

योग असंख्या जिनशासनमां मुक्ति पद देनारा

सर्व श्रेष्ठ स्वाध्याय योग मलधारीजी कहेनारा

धन ते.......

वैयावच्चथी स्वाध्यायदिक शक्ति पाचन करता

ते ज मुनि जिनशासननी साची सेवाने करता

धन ते.......

वैयावच्चथी ग्लानवृद्ध आदि ने शाता आपे

जीवन समाधि-मरण समाधि ते शाश्वत सुख ने मापे

धन ते.......

तीर्थंकर पदवी नुं कारक वैयावच्च जे करता

शास्त्र प्रमाणे स्वार्थ छोडी ने ते मुनिवर दुर्लभता

धन ते.......

बावीसजिन निवार्ण काले पण मासक्षमण तप धारी

निराहार बनवानी साधना आहार त्यजी मुनि धारी

धन ते.......

देवो केसर मिश्रित जलथी दीक्षोत्सव मुज करता

लोचथी वहेती रुधिरनी धारा जोइ आनंद ने वरता

धन ते.......

# जा संयम पंथे दीक्षार्थी

जा संयम पंथे दीक्षार्थी.... तारो पंथ सदा उजमाल बने
जंजीर हती जे कर्मोनी.... ते मुक्तिनी वरमाल बने... जा संयम...1
होशे होशे तु वेश धरे.... ते वेश बने पावनकारी...
उज्वलता एनी खूब वधे... जेने भावथी वंदे संसारी
देवो पण झंखे दर्शन ने... तारो एवों दिव्य देदार बने... जा संयम...2
जे ज्ञान तने गुरुए आप्यु... ते उतरे तारा अंतरमा....
रग-रगमां एनो स्त्रोत वहे... ते प्रगटे तारा वर्तनमां...
तारा ज्ञानदीपकना तेज थकी... आ दुनिया झाकझमाल बने... जा संयम...3
वीतराग तणा वचनो वदती... तारी वाणी हो अमृत धारा
जे मार्ग ढूंढे अंधारे... तारां वेण करे त्या अजवालां
वैराग्यभरी माधुरी भाषा... तारा संयम नो शणगार बने... जा संयम...4
जे परिवारे तुं आज भले.... ते उन्नत हो तुज नाम थकी
जीते सहुनो तु प्रेम सदा... तारा स्वार्थ विहोणा काम थकी
शासननी जगमां शान वधे... तारा एवा शुंभ संस्कार बने... जा संयम...5
अणगारतणां जे आचारो.... तेनु पालन तु दिनरात करे
ललचावे लाख प्रलोभन पण... तुं धर्म तणो संगाथ करे
संयम नु साचुं आराधन.... तारा तरवानो आधार बने... जा संयम...6

# ओघो छे अणमोलो

(राग : होठो से छू लो तुम)

ओघो छे अणमोलो... एनुं खूब जतन करजो...
मोंघी छे मुहपत्ति... एनुं रोज रटण करजो...
आ वेश आप्यो तमने... अमे एवी श्रद्धाथी
उपयोग सदा करजो... तमे पूरी निष्ठाथी
आधार लइ एनो... धर्माराधन करजो.. ओघो.... 1
आ वेश विरागीनो... एनुं मान घणु जगमां

माँ-बाप नमे तमने... पड़े राजा पण पगमां.
आ मान नथी मुजने... एवुं अर्थ घटन करजो... ओघो.... 2
आ टुकडा कपडाना... कडी ढाल बनी रहेशे
दावानल लागे तो... दीवाल बनी रहेशे
एना ताणावाणा मां... तपनुं सिंचन करजो... ओघो.... 3
आ पावन वस्त्रों छे.... तारी कायानु ढांकण
बनी जाय ना जो जो... ते माया नु ढांकण
चोख्खुं ने जगमगतुं.... दिलनुं दर्पण करजो...ओघो.... 4
मेलां के धोयेला... लीसां के खरबचडा
फाटेला के आखां... सौ सरखा छे कपडा
ज्यारे मोह दशा जागे... त्यारे आ चिंतन करजो...ओघो.... 5
आ वेश उगारे छे... एने जे अजवाले छे
गाफेल रहे एने..... आ वेश डुबाडे छे
डुबवुं छे के तरवु.... मनमां मंथन करजो.... ओघो.... 6

## जेना रोम रोम थी

(राग = जहा डाल डाल पर सोने की...)

जेना रोम रोम थी त्याग अने संयमनी विलसे धारा
आ छे अणगार अमारा...
दुनियामां जेनी जोडे जडे ना, एवुं जीवन जीवनारा... आ.छे.... 1
सामग्री सुखनी लाख हती... स्वेच्छाए एणे त्यागी...
संगाथ स्वजननो छोडी ने... संयमनी भिक्षा मांगी...
दीक्षानी साथे पंचमहाव्रत... अंतरमां धरनारा.... आ.छे.... 2
ना पंखो वींझे गरमीमां... ना ठंडी मा कदी तापे...
ना काचा जलनो स्पर्श करे... ना लीलोतरी ने चापे...
नाना मां नाना जीवोनु पण... संरक्षण करनारा... आ.छे.... 3
जूठु बोलीने प्रिय थवानो... विचार पण ना लावे...
या मौन रहे या सत्य कहे... परिणाम गमे ते आवे...
जाते ना ले कोई चीज कदी... जो आपो तो लेनारा... आ.छे.... 4

ना संग करे कदी नारीनो... ना अंगोपांग निहाले...
जो जरुर पडे तो वात करे... पण नयनो नीचा ढाले....
मन थी वाणी थी काया थी... व्रतनु पालन करनारा... आ.छे.... 5
ना संग्रह एनो कपडांनो.... ना बीजा दिवसनु खाणुं...
ना पैसा एनी झोली मां... ना एना नामे थाणुं...
ओछा मां ओछा साधन मां... संतोष धरी रहेनारा... आ.छे.... 6
ना छत्र धरे कदी तडकामां... ना फरे कदी वाहन मां...
मारग हो चाहे कांटालो..... पहेरे ना कांई पगमां...
हाथे थी सघला वाल चूंटे... माथे मुंडन करनारा... आ.छे.... 7
कल्याण जीवोनु करवा काजे... विचरे देश विदेशे...
ना रायरंक के उंच नीच.... सरखा सौने उपदेशे...
अपमान करो या सन्मानो... समताभावे रहेनारा... आ.छे.... 8

## रुडा राज महेल ने त्यागी

रुडा राज महल ने त्यागी, पेलो चाल्यो रे वैरागी... (2)
एनो आतम उठयो छे आज जागी, पेलो चाल्यो रे वैरागी... (2)
नथी कोई एनी, रे संगाथे, नीचे धरती ने आभ छे माथे
ए तो नीकल्यो छे खाली हाथे (2) ..1
एणे मुकी आ जगतनी माया, एनी युवान छे हजुये काया
एणे मुक्ति मां दीठो सार.... (2) ..2
एणे संयमनी तलप ज लागी, एनो आतम आज बन्यो मोक्षगामी
एनी भवोभवनी भ्रमणा भांगी (2) ..3

## साधु बने कोई

साधु बने कोई, संसार ने छोडी
एवा विरागीनु बधा बहुमान करे छे, सन्मान करे छे.. साधु ..1
जेने साचुं ज्ञान मल्यु छे जीवननु, वलगेलुं अज्ञान गयुं छे भव भवनुं.
ए भाग्यशालीनो सहु सत्कार करे छे, सन्मान करे छे... साधु ..2
उज्ज्वल जेणे कुल बनाव्युं पोतानुं, जन्मभूमिने स्थान बनाव्यु शोभानु.

ए धन्य आत्मा ना बधा गुण गान करे छे, सन्मान करे छे... साधु...3
जेना तेजे दीप धरमनो झलके छे, किरणो जेना कुंदन जेवा चमके छे,
ए ज्योतनो जग मां सहु जयकार करे छे, सन्मान करे छे.. साधु...4
आशा एना अंतरनी फलवानी छे, माला एने मुक्तिनी मलवानी छे
ए मुक्तिगामीने सहु फूल हार करे छे, सन्मान करे छे... साधु ...5

## साधनाना पंथे आजे

साधनाना पंथे आजे एक ऊंचो आत्मा जाय
आज एने आपीए अंतरना रुडा आशीर्वाद,
वहेली-वहेली, मलजो एने मुक्ति नी मंजिल (2) साधनाना पंथे...1
ज्यां जुओ त्यां लोको आजे सुखना साधन मागे छे
ने दुःखथी छेटा भागे छे,
विरला कोइ नीकले छे जे सुख सामग्री त्यागे छे
ने कष्ट कसोटी मागेछे....
वडलानो छांयो छोडीने (2) रणना रस्ते तपवा जाय
आज एने आपीए.... ...2
धर्म तणा मारगमां जाता लोको हांकी जाय छे
ने वचमां बेसी जाय छे ....
अभिनंदन ए आत्माने जे लांबी सफरे जाय छे
ने होशे होशे जाय छे....
नानुं एवुं बालक जाणे (2) मोटो डुंगर चढवा जाय
आज एने आपीए... ...3
राग द्वेषना आ दरियामां कैंक जीवो खेचाय छे
ने अधवच डूबकां खाय छे
ए आत्मा ने वंदन हो जे समये लागी जाय छे
ने डूबतां उगरी जाय छे
संयमनो सथवारी लइने (2) भवनो सागर तरवा जाय छे
आज एने आपीए.... ...4

# डगले ने पगले मने

(राग = मंदीर छो...)

डगले अने पगले सतत हिंसा मने करवी पडे
ते धन्य छे जेने अहिंसा पूर्ण जीवन सांपडे
क्यारे थशे करुणाझरणथी आर्द्र मारुं आंगणु
आ पापमय संसार छोडी श्रमण हुं क्यारे बनु! (1)
क्यारेक भय क्यारेक लालच चित्तने एवां नडे
व्यवहारमां व्यापारमां जुठुं तरत कहेवु पडे
छे सत्य महाव्रत घर श्रमणनुं जीवन घर रकियामणुं
आ पाप मय....(2)
जे मालिके आप्या वगरनुं तणखलु पण ले नहि
वंदन हजारो वार हो ते श्रमणने पल-पल महीं
हु तो अदत्तादान माटे गाम परगामे भमुं
आ पापमय....(3)
जे इन्द्रियोने जीवननी क्षण एक पण सोंपाय ना
मुज आयखुं आखुं वीत्युं ते इन्द्रियोनो साथ मां
लागे हवे श्री स्थूलभद्रतणुं स्मरण सोहामणुं
आ पापमय...(4)
नवविध परिग्रह जिंदगीभर हुं जमा करतो रह्यो
धनलालसामां सर्वभक्षी मरण ने भूली गयो
मूर्च्छारहित संतोषमां सुख छे खरेखर जीवन नुं
आ पापमय... (5)
अबजो वरसनी साधनानो क्षय करे छे क्षणमही
जे नरकनो अनुभव करावे स्वपर ने अहीं ने अहीं
ते क्रोध थी बनी मुक्त समता युक्त हु क्यारे बनुं
आ पापमय... (6)
जिनधर्म तरुना मूल जेवा विनय गुणने जे हणे

जे भलभला ऊंचे चडेलाने य तरणा सम गणे
ते दुष्ट मानसुभटनी सामे बल बने मुज वामणुं
आ पापमय... (7)

श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ने जेणे बनाव्या स्त्री अने
संक्लेशनी जालिम अगनमां जे धखावे जगतने
ते दंभ छोडी सरलता ने पामवा हुं धनगनुं
आ पापमय... (8)

जेनु महासाम्रज्य एकेन्द्रिय सुधी विलसी रह्युं
जेने बनी परवश जगत आ दुःख मां कणसी रह्युं
जे पापनो छे बाप ते धनलोभ में पोष्यो घणुं
आ पापमय... (9)

तन-धन स्वजन जीवन ऊपर मे खूब राख्यो राग पण
ते रागथी करवुं पडयुं मारे घणा भवमां भ्रमण
मारे हवे करवुं हृदयमां स्थान शासन राग नु
आ पापमय... (10)

में द्वेष राख्यो दुःख उपर तो सुख मने छोडी गयुं
सुख दुःख पर समभाव राख्यो, तो हृदय ने सुख थयुं
समजाय छे मुजने हवे, छे द्वेष कारण दुःख नुं,
आ पापमय... (11)

जे स्वजन तन धन उपरनी ममता तजी समता धरे
बस बारमो होय चन्द्रमां, तेने कलह साथे खरे
जिन वचनथी मघ-मघ थजो मुज आत्माना अणु अणु
आ पापमय... (12)

जो पूर्व भवमां एक जूंठ आल आप्युं श्रमण ने
सीता समी उत्तमसती ने, रखड पट्टी थइ वने
इर्ष्या तजु बनु विश्ववत्सल, एक वांछित मन तणुं
आ पापमय... (13)

मारी करे कोई चाडी चूगली ए मने न गमे जरी
तेथी ज मे, आ जीवनमां नथी कोई पण खटपट करी
भवोभव मने नड़जो कदी ना पाप आ पेशुन्यनुं

आ पापमय... (14)

क्षण मां रति क्षण मां अरति आ छे स्वभाव अनादिनो
दुःख मां रति सुखमां अरति, लावी बनुं समता भीनो
संपूर्ण रति बस, मोक्ष मां हुं स्थापवाने रणझणुं

आ पापमय... (15)

अत्यंत निन्दापात्र जे आ लोकमां य गणाय छे
ते पाप निन्दा नामनुं तजनार बहु वखणाय छे
तजुं काम नक्कामु हवे आ पारकी पंचात नुं

आ पापमय... (16)

माया मृषावादे भरेली छे प्रभु ! मुज जिंदगी
ते छोडवानु बल मने दे, हुं करु तुज बंदगी
बनु साचदिल आ एक मारु स्वप्न छे आ जीवन नु

आ पापमय... (17)

सहु पापनुं, सहु कर्मनुं, सहु दुःखनुं जे मूल छे
मिथ्यात्व भूंडु शूल छे, सम्यक्त्व रुडुं फूल छे
निष्पाप बनाव हे प्रभुजी ! शरण चाहुं आपनुं

आ पापमय... (18)

ज्यां पाप ज्यारे एक पण तजवुं अति मुश्केल छे
ते धन्य छे, जेओ अढारे पापथी विरमेल छे।
क्यां पाप मय मुज जिंदगी, क्या पाप शून्य मुनिजीवन।
आ पापमय संसार छोडी श्रमण हुं क्यारे बनु

आ पापमय... (19)

।।नमोऽस्तु तस्मै जिनशासनाय।।

## भावदीक्षाना - संयमपरिणामना = सर्वविरति अध्यवसायना
## प्रापक - रक्षक - पोषक - संवर्धक
## अद्‌भूत- अद्वितीय-अणमोल-असरकारक
## पुस्तको
## वांचवानुं भूलता नही

(1) शरणागति (2) विराट जागे छे त्यारे (3) विरागनी मस्ती (4) महापंथना अजवाला (5) महाभिनिष्क्रमण (6) वंदना (7) उंडा अंधारे थी (8) गुरुमाता (9) मुनिजीवननी बाल पोथी (10) हवे तो मात्रने मात्र सर्वविरति.

(1) संविग्नसंयमीओनी नियमावलि (2) अष्ट प्रवचन माता (3) महाव्रतो (4) धन ते मुनिवरा रे... (5) आत्मसंप्रेक्षण (6) शल्योद्धार (7) धन धन्नो अणगार रे... (8) गुरुत्वं प्रणिदध्महे (9) सामाचारी प्रकरण (पाछलनु गुजराती) (10) ओघ निर्युक्ति सारोद्धार भाग-1-2

आ उपरांत....

पू.पं. अभयसागरजी म. ना. संयमोपयोगी पुस्तको

पू.आ.भ. श्री यशोविजयसूरि म.ना पुस्तको

पू.आ.भ. श्री रत्नसुंदरसूरिजी म.ना संयमोपयोगी पुस्तको

पू.आ.भ. श्री मुक्तिवल्लभसूरिजी म.ना संयमोपयोगी पुस्तको

पू.पं.भ. श्री यशोविजयजी म. ना संयमोपयागी पुस्तको

खास.... खास.... खास वांचवा जेवा छे

(बीजा पूज्य भगवंतो ना पण हशे ज, पण ए मारा ध्यान मा न होवाथी अत्रे लख्या नथी, पण एवा पण पुस्तको वांचवा, उपरना पुस्तको तमारी इच्छा हशे, तो अमे तमने मेलवी आपीशु)

# श्रमण भगवान महावीर देव द्वारा विश्व को दी गई अनमोल भेट

## श्रमण वेष + श्रमणाचार (व्यवहार मार्ग)

ठीक....

भाव सम्यक्त्व उत्कृष्ट से असंख्य भवो में मिल सकता है, उसके बाद मोक्ष....

भाव देशविरति उत्कृष्ट से असंख्य भवो में मिल सकता है, उसके बाद मोक्ष....

भाव दीक्षा उत्कृष्ट से आठ ही भवो में मिल सकती है, आठवें भव में अवश्य मोक्ष !

ऐसे मोक्ष की प्राप्ति तो भावदीक्षा = श्रंमणभाव ही कराता है,

लेकिन

यह श्रमण भाव की प्राप्ति **श्रमणवेष व श्रमणाचार** बिना शक्य नहीं!

इस लिये मोक्ष पाने के लिये जो श्रमण भाव की इच्छा रखते है

उनको यह सद्गुरु के पास याचना करनी ही पडेगी कि **मुझे वेष श्रमण का मिले रे...**

यह वेष पाकर के श्रमणाचार पालना पडेगा। तो श्रमण भाव मिलेगा, तो मोक्ष मिलेगा...

Divyam Graphics
YOUR IMAGINATION, OUR CREATION
9884232891